स्मार्त्त यज्ञ कनिष्ठ सहायक

व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्तर 2.5

राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

स्मार्त्त यज्ञ कनिष्ठ सहायक

प्रधान सम्पादक

प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्

सचिव

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

लेखकगण

डॉ. मिथिलेश कुमार पाण्डेय — डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, ज्योतिषाचार्य

एम०ए०, पीएचडी०(आचार्य अथर्ववेद शौनक) — एम०ए०, एम० फिल०, पीएचडी०(शैक्षिक सहायक)

प्रधान संयोजक

डॉ.अनूप कुमार मिश्र

सहायक निदेशक, प्रकाशन एवं शोध अनुभाग

आवरण एवं सज्जा : श्री शैलेन्द्र

तकनीकी सहयोग एवं टङ्कण : डॉ. अभय कुमार पाण्डेय

© महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जयिनी

ISBN :

मूल्य :

संस्करण : 2024

प्रकाशित प्रति : PDF

प्रकाशक : महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान

(शिक्षामन्त्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Email: msrvvpujn@gmail.com, Web: msrvvp.ac.in

दूरभाष (0734) 2502255, 2502254

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय कौशल भारत मिशन का उद्देश्य शिक्षण विकास एवं प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास कर रोजगार प्रदान करना है। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन सदैव शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अग्रसर रहा है अतः आदर्श वेद विद्यालयों, पाठशालाओं एवं भारत के विद्यालयों में वैदिक कौशल विकास शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा अनेकानेक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे शिक्षार्थी प्रशिक्षण के ज्ञानार्जन द्वारा स्वयं को अद्यतन एवं जागृत कर सकेंगे तथा इसके विषय ज्ञान का लाभ अपने दैनन्दिन जीवन के साथ-साथ आजीविका प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

स्मार्त्त यज्ञ कनिष्ठ सहायक पाठ्यपुस्तक में इकाईयों के विषयों को विविध आयामों के साथ सहज एवं प्रभावी तरह से प्रस्तुत किया गया है लेकिन फिर भी **कोई दोष हों तो हमें सूचित अवश्य** करें क्योंकि हमारा परम उद्देश्य वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर वैदिक ज्ञान को कौशल विकास के माध्यम से जन-जन पहुँचाना है। अतः पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विद्वानों के समस्त सुझावों का स्वागत है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

भूमिका

जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त मनुष्य के जितने भी कर्म या संस्कार होते हैं, वे सब यज्ञ के नाम से जाने जाते हैं। जैसे शयन विधि, भोजन विधि, नित्य कर्म, नैमित्तिक कर्म इत्यादि। प्रश्न यह है कि सभी प्राणियों में उपर्युक्त गतिविधियाँ होती है तो इस विधि को यज्ञ की संज्ञा देने का प्रयोजन क्या है? इसके उत्तर हेतु हितोपदेश का यह श्लोक पर्याप्त है-

आहार निद्रा भय सन्ततित्वं सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।

ज्ञानं हि तेषामधिको विशेषो ज्ञानेन हीना पशुभिः समाना।।(हि.मित्रलाभ)

आहार, निद्रा, भय, सन्तोत्पादन पशु एवं मनुष्यों में सामान्य है लेकिन मनुष्य जाति में एक ज्ञान की विशेषता होने से देश, काल स्थिति से अवगत होकर कार्य करने से वह सम्यक रूप से सफल होता है। किसी भी कार्य को करने के लिए उचित समय, साधन एवं वातावरण की आवश्यकता होती है, इसके अभाव में कार्य तो होगा परन्तु कितना फलदायी होगा ऐसा कहना कठिन है एतदर्थ किसी भी कार्य का एक नियम होता है। भारतीय संस्कृति के मूल स्तम्भ हमारे वेद हैं। वेद को श्रुति कहते है। श्रुति आधारित जो कर्म है वह श्रौत यज्ञ के नाम से जाने जाते हैं, इसके अतिरिक्त कल्पादि गृह्यसूत्रों एवं स्मृति आधारित जो कर्म हैं, उन्हें स्मार्त्त यज्ञ कहते हैं। स्मार्त विद्या के ज्ञान के पश्चात् ही श्रौत में प्रवेश होता है। सामान्य रूप से शौच विधि, स्नानविधि, सन्ध्याविधि एवं पञ्चमहाभूत यज्ञ से ही स्मार्त्त यज्ञ प्रारम्भ होता है। सभी कर्मों का एक नियम है जिसके आधार पर वह सम्पादित होता है। यदि नियमों के विना कार्य होगा वह कितना फलदायी होगा यह, कहना दुष्कर है।

स्मार्त्त यज्ञ विद्या में इन सभी के प्रारम्भिक विषयों का समावेश कर मनुष्य के सभी कर्मों को एक नियम के माध्यम से चलने का प्रयास है। "**यज्ञो वै विष्णुः**" यज्ञ विष्णु है। **व्याप्तं विष्णुः** जो व्याप्त है वह विष्णु है। "**सर्वं विष्णुमयं जगत्**"।

अर्थात् जो भी कर्म है, वह विष्णुस्वरूप है इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जो भी कर्म करें वह मुझे अर्पण करते जाओ जैसे-

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।

यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।(श्रीमद्भगवद्गीता 9.27)

डॉ. मिथिलेश कुमार पाण्डेय

विषयानुक्रमणिका

1.यज्ञ परिचय- **1-9**

1.1. यज्ञ की व्युत्पत्ति, व्याख्या

1.2. यज्ञों के प्रकार

1.3. यज्ञ का महत्त्व

1.4. यज्ञ का प्रादूर्भाव एवं प्रारम्भ

1.5. यज्ञ के अङ्ग

2.स्मार्त्त यज्ञ के अन्तर्गत सप्त पाक संस्था का परिचय 11-18

2.1. औपासन होम

2.2. वैश्वदेव

2.3. पार्वणविधि-

2.4. अष्टका श्राद्ध

2.5. मासिक श्राद्ध

2.6. शूलगव

2.7. श्रवणाकर्म

3.ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र परिचय 19-29

3.1. आश्वलायन गृह्यसूत्र-

3.2. प्रथम अध्याय के विषय परिचय

3.3. द्वितीय अध्याय के विषय परिचय

3.4. तृतीय अध्याय के विषय परिचय

3.5. चतुर्थ अध्याय के विषय परिचय

4.यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र परिचय 30-33

4.1. पारस्कर गृह्यसूत्र
4.2. प्रथम काण्ड के विषय परिचय
4.3. द्वितीय काण्ड के विषय परिचय
4.4. तृतीय काण्ड के विषय परिचय
5. **सामवेदीय गृह्यसूत्र परिचय** **34-41**
5.1. गोभिल गृह्यसूत्र-
5.2. प्रथम प्रपाठक विषय परिचय
5.3. द्वितीय प्रपाठक विषय परिचय
5.4. तृतीय प्रपाठक विषय परिचय
5.5. चतुर्थ प्रपाठक विषय परिचय
6.अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र परिचय **42-46**
6.1. कौशिक गृह्यसूत्र-
6.2. प्रथम, द्वितीय, तृतीय अध्याय के विषय परिचय
6.3. चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ अध्याय के विषय परिचय
6.4. सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय के विषय परिचय
6.5. दशम, एकादश, द्वादश अध्याय के विषय परिचय
6.6. त्रयोदश, चतुर्दश अध्याय के विषय परिचय
7. यज्ञ सामग्री परिचय सङ्कलन **47-58**
7.1. यज्ञ में प्रयुक्त विषयवस्तु
7.2 प्रायश्चित्तार्थ द्रव्य -(पञ्चगव्य)
7.3. यज्ञ सामग्री एवं पूर्णाहुति सामग्री
7.4. मातृपूजन सामग्री
7.5. हविर्द्रव्य, आज्य
7.6. यज्ञ के पूर्व प्रायश्चित कराना

इकाई- 1, यज्ञ परिचय

मुख्य रूप से यज्ञ दो प्रकार के होते हैं- 1. श्रौत यज्ञ 2. स्मार्त्त यज्ञ। श्रुतिप्रतिपादित यज्ञ को श्रौतयज्ञ एवं स्मृतिप्रतिपादित यज्ञों को स्मार्त्त यज्ञ कहते हैं। श्रौतयज्ञों में श्रुतिप्रतिपादित मन्त्रों का प्रयोग तथा स्मार्त्त यज्ञों में वैदिक, तान्त्रिक और पौराणिक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है लेकिन यहाँ हम मुख्य रूप से स्मार्त यज्ञों का अध्ययन करेंगे-

1.1. **यज्ञ की व्युत्पत्ति- यज भावे। यागे अमरः। स त्रिविधः अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते। यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः, अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्। इज्यते भरतश्रेष्ठ! तं यज्ञं विद्धि राज्यसम्। विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।(गीता 17.13) यज्ञ की व्याख्या-** संसार में सबसे बड़ा और महत्त्व का स्थान वही है जहाँ से शाश्वत सुख और शान्ति प्राप्त हो सके। स्मार्त यज्ञ से वह सुलभ है। **"यज्ञो वै विष्णुः"** (तैत्ति.सं.1.7.4) मनुष्य अपने प्रयत्न से जब थक जाता है और नैराश्य का अनुभव करने लगता है तब वहाँ अग्नि से समर्थता की प्रार्थना कर सकता है। अर्थात् यज्ञ, आराधना विशेष विधिवत् होने पर ही फलप्रद होती है। इसी यज्ञ से आराध्य देव सन्तुष्ट होकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं जैसा कि प्राचीनकाल में हमारे ऋषि- मुनियों के द्वारा जो क्रिया हुई, वह क्रिया ही यज्ञ था। अर्थात् ऋषि- मुनि स्वाभीष्ट सिद्धि हेतु अपने आराध्य भगवान की आराधना करते थे वह यज्ञ का ही स्वरूप था।(यज्ञस्य) यज्ञ के (पुरोहितं) पुरोहित (ऋत्विजम्) ऋत्विक् (होतारं) यज्ञ में इन्द्रादि देवों को बुलाने वाले (रत्नधातमम्) सर्वाधिक रमणीय रत्नों को धारण करने वाले या देने वाले (देवम्) प्रकाशमय (अग्निम्) अग्नि की (ईळे) प्रार्थना करता हूँ। यथा-

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋ.1.1.1)

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः1.164.50 ऋग्वेद), शु.य.31.16(यज्ञ की उत्पत्ति वेदों के साथ ही हुई थी जैसा कि ऋग्वेद वचन है यथा-

(अग्निः (पूर्वेभिः) अग्निदेव (प्राचीनकाल के नवीन व (नूतनैः) और (उत)र्तमान काल के (ऋषिभिः) ऋषियों द्वारा इन्द्र (देवान्) वह (सः) प्रार्थना के योग्य हैं। (ईड्यः), विष्णु आदि देवों को यहाँ पर (इह) हमारे यज्ञ में लेकर आएँ (अवक्षति)। यथा-

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति (ऋ.1.1.2)

यज्ञ की उत्पत्ति सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही हो गयी थी जैसा कि इस विषय का भगवद्गीता में उल्लेख है यथा-

सहयज्ञाः प्रजां सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।

अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्ट कामधुक् ।।(भगवद्गीता 3.10)

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से देवात प्रसन्न होकर अभीष्ट फल प्रदान करते आ रहें हैं। जैसा कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है-

देवान् भावयताऽनेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तं श्रेयः परमवाप्स्यथ ।।(भ.गी.3.11)

कल्याण भावना रूपी यज्ञों से प्रसन्न होकर इन्द्रादि देवता अभिष्टफल प्रदान करते थे। जैसा कि वेद वचन है यथा-

देहि मे ददामिते निमेधेहि निते दधे।

निहारं च हरासि मे निहारं निहराणिते ।।(शु यु.3.50)

इन्द्र यजमानों से बोल रहे हैं कि आप मुझे हविः प्रदान कीजिए मैं आपको मनोवाच्छित फल प्रदान करुँगा। पुनः इन्द्र बोल रहे हैं कि यदि आप हविः देंगे तब हविः अभीष्ट प्रतिफल प्रदान करेगा।

इस प्रकार वैदिक युग में ऋषि-मुनियों को देवों की आराधना से ही यज्ञ प्राप्त हुआ तत्पश्चात वेदवेदाङ्गों में पारंगत ब्रह्मवेत्ता महर्षियों ने इस ज्ञान को आगे बढ़ाया। उन्होंने तपस्या के द्वारा सृष्टि उत्पत्ति के साथ प्राप्त ज्ञान से हम भारतीयों को लाभान्वित किया।

1.2. **यज्ञों के प्रकार**- मुख्य रूप से यज्ञ दो प्रकार के होते हैं- 1. श्रौत यज्ञ 2. स्मार्त्त यज्ञ। श्रुतिप्रतिपादित यज्ञ को श्रौतयज्ञ एवं स्मृतिप्रतिपादित यज्ञों को स्मार्त्त यज्ञ कहते हैं। श्रौतयज्ञों में श्रुतिप्रतिपादित मन्त्रों

का तथा स्मार्त्त यज्ञों में वैदिक, तान्त्रिक और पौराणिक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है लेकिन यहाँ हम मुख्य रूप से स्मार्त्त यज्ञों का अध्ययन करेंगे-

1.3. यज्ञ का महत्त्व- वैदिक ऋषियों ने मानवमात्र के कल्याण के लिये पाँच महायज्ञों को प्रतिदिन व प्रतिपल करने का विधान किया है। वे पाँच यज्ञ हैं- ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ। इन पाँच महायज्ञों में अपनी विशिष्ट भूमिका रखने वाला यज्ञ 'देवयज्ञ' है। इसी को हवन, अग्निहोत्र अथवा होम भी कहते हैं।**"यदग्नौ हूयते स देवयज्ञः" यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म** श).ब्रा.(1.7.1.5

पञ्चगृहस्थकर्त्तव्या यज्ञा-

- ❖ **ब्रह्मयज्ञ-** वेदों का स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ है। यथा- **अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः** (गरुण अ.115)
- ❖ **देवयज्ञ** – देवों के निमित्त अग्नि में आहुति देना देवयज्ञ है।
- ❖ **पितृयज्ञ-** जल द्वारा पितरों को तर्पण प्रदान करना पितृयज्ञ है। यथा- **पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।** (गरुण अ.115)
- ❖ **भूतयज्ञ-** जीव-जन्तुओं को विनम्रता पूर्वक भोजन प्रदान करना भूतयज्ञ(बलिवैश्वदेव) है। यथा- **होमो दैवौ बलिर्भौतो।** (गरुण अ.115)
- ❖ **मनुष्ययज्ञ-** ब्राह्मणों अथवा अतिथियों को ऋद्धापूर्वक भोजन कराना मनुष्य यज्ञ है। **नृयज्ञो·तिथिपूजनम्** ।

पञ्च वा एते महायज्ञास्सतति प्रतीयन्ते सतति सन्तिष्ठन्ते देवयज्ञः पितृयज्ञो भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञो ब्रह्मयज्ञ इति यदग्नौ जुहोत्यपि समिधन्तर्द्देवयज्ञस्सन्तिष्ठते यत्पितृभ्यस्स्वधा करोत्यप्यपस्तत्पितृयज्ञस्सन्तिष्ठते यद्भूतेभ्यो बलिꣳ हरति तद्भूतयज्ञस्सन्तिष्ठते यद्ब्राह्मणेभ्योऽन्नन्ददाति तन्मनुष्ययज्ञस्सन्तिष्ठते यथ्स्वा-ध्यायमधीयीस्सा तैकामप्यृचँय्यजु म वा तद्ब्रह्मयज्ञस्सन्तिष्ठते।(तैत्ति. आ. द्वि. प्र.)

अर्थात् जो अग्नि में हवन किया जाता है, उसे देवयज्ञ कहते हैं। इसमें उत्तमोत्तम समिधाओं से हवनकुण्ड में अग्नि प्रज्वलित करके वेदमन्त्रों के साथ सुगन्धित हव्य-पदार्थों से आहुतियाँ दी जाती हैं।

यज्ञ के विषय में तो यहाँ तक कहा जाता है कि यज्ञ भारतीय संस्कृति का प्राण है। व्यक्ति जब माता के गर्भ में होता है तभी से ही वह अपने आसपास यज्ञ के वातावरण को महसूस करता है, और इसी यज्ञ के वातावरण में जन्म लेता है।

यज्ञ में ही अपना समस्त जीवन व्यतीत करता हुआ मानव अन्त में यज्ञ में ही अपने जीवन की यात्रा को समाप्त करके परलोक प्राप्त करता है। दैनिक जीवन में उसे अग्निहोत्र, पञ्चमहायज्ञ, षोडश-संस्कार तथा अन्य कई श्रौतयज्ञ तो करने ही होते हैं, परन्तु शास्त्रकारों ने यहाँ तक कहा है कि वह अपने सम्पूर्ण जीवन को यज्ञ ही समझे। जैसा कि उपनिषद् में लिखा है- "**पुरुषो वाव यज्ञः**" । (छान्दो., 3.16)

प्रत्येक मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है मोक्षप्राप्ति अतः वे वैदिक नित्यकर्म और पञ्चमहायज्ञ भी करते हैं तथा सभी शास्त्र इसके प्रमाण भी हैं। इसी साक्ष्य को स्पष्ट करते हुए मैत्रायणी उपनिषद् में कहा गया है- "**अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः**" (मै.उ., 6.36)

1.4. यज्ञ का प्रादूर्भाव एवं प्रारम्भ- हमारी भारतीय संस्कृति वैदिक काल से लेकर आज तक "यज्ञ, दान एवं त्याग" के द्वारा परब्रह्म से आत्मिक ज्ञान को प्राप्त कर पृथिवी लोक पर स्थित प्राकृतिक पदार्थों और जीव-जन्तुओं का संवर्धन करते हुए उनका सर्वाङ्गीण विकास कर रही है। इस विकास का आधार तप, दान और यज्ञ ही है। जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् में वर्णन है **तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसा नाशकेन।** संस्कति सम्पन्न मानव इष्ट देवता की आराधना को ही सही साधन समझ कर उस देव-तत्त्व के स्वरूप, स्वभाव एवं गुणादिकों को जानने का प्रयत्न करता है। ध्यान, धारणा एवं तपस्यादि के द्वारा देव-तत्त्व के स्वरूप स्वभावादि का ज्ञान प्राप्तकर उसकी आराधना के लिए प्रवृत्त होता है। आराधना की प्रवृत्तियाँ यद्यपि विविध हैं किन्तु श्रुति और स्मृति के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग की प्रवृत्ति ही श्रेष्ठ है। अतः इस प्रकार की प्रवृत्ति के द्वारा जो देवाराधना की जाती है यही याग एवं यज्ञ है।

यज्ञ के पुरोहित ऋत्विक् यज्ञ में इन्द्रादि देवों का आवाहन करने वाले सर्वाधिक रमणीय धनों को धारण करने वाले या देने वाले अग्निदेव की प्रार्थना करता हूँ अर्थात् मैं अग्नि, पुरोहित,यज्ञ के देव ऋत्विज, होता एवं रत्नधाता ईश्वर की स्तुति करता हूँ। इससे स्पष्ट है कि यज्ञ की उत्पत्ति वेदों के साथ ही हो गई थी क्योंकि ऋग्वेद का आरम्भ अग्निदेव की स्तुति से ही हुआ है। यथा-

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋग्वेद 1.1.1)

देव आराधना हेतु धार्मिक कर्मों में यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है- **"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" (शत. ब्रा.** 1.7 1.5) **वेदों में देवता पूज्य और आराध्य होने के कारण देवता को भी यज्ञ के नाम से अभिहित किया गया है- "यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः"** (मा. सं. 31.16) **अर्थात् एक चेतन तत्त्व किसी दूसरे उत्कृष्ट चेतन-तत्त्व के लिए जो यजन करता है, वही यज्ञ है।** अतः प्राकृतिक विकास से लेकर जीव का विकास इस धर्म के स्रोत यज्ञ पर ही निर्भर हैं जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् का वचन है **त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमः** (2.23) वेद में सम्पूर्ण विश्व के विकास के लिए साधन निहित है। इसी श्रुति ने संसार के हित के लिए विविध यज्ञों का विधान किया । शनैः-शनैः सृष्टि हेतु संसाधनों का विकास होने लगा वैसे हमारे ऋषि-मुनियों ने अपने तपोबल की शक्ति के अभ्यास एवं ऊहापोह की कुशलता तथा बौद्धिक क्षमता से मनुष्य के सुख के लिए यज्ञों का विधान किया। सृष्टि के आदि काल में भगवान् परमेष्ठी (प्रजापति) के द्वारा अनुष्ठित प्रथम यज्ञ देवताओं को प्राप्त हुआ। देवताओं से ऋषियों को एवं ऋषियों से परम्परया हम भारतीयों को यह यज्ञ सम्पदा प्राप्त हुई। वेदिस्थ अग्नि द्युलोक का शिर और पृथिवी का स्वामी है। वह समस्त जलों, प्राणियों की उत्पत्ति को पुष्ट करता है अर्थात् यज्ञ करने से वर्षा होती है, वर्षा से अन्नादि आदि उत्पन्न होता है और अन्न से समस्त जीव पुष्ट होते हैं।

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाँ रेताँसि जिन्वति॥ (3.12)

विद्वान् अग्नि में जो घृत आदि की आहुति देते हैं, इसके अनुग्रह से अन्तरिक्ष को प्राप्त होकर वहाँ के ठहरे हुए जल को शुद्ध करती हैं और वह शुद्ध हुआ जल सुगन्धि आदि गुणों से सब पदार्थों को आच्छादन करके सब प्राणियों को सुख देता है अर्थात् विद्वान् अग्नि में जो घृत आदि की आहुति देते हैं, इसके अनुग्रह से वे अमृत प्राप्त करते हैं।

स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृतपृष्ठं मनीषिणः। यत्रामृतस्य चक्षणम्॥ (ऋग्वेद 1.13.5)

जैसा कि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णन है-

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।(गी.अ. 3. 14)

यज्ञ के द्वारा ऐहिक एवं आमुष्मिक समस्त प्रकार की कामनाएँ पूर्ण होती एवं आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक समस्याओं से रक्षा होती है। यज्ञ कामनाओं को पूर्ण करने वाला उत्तम कर्म है।

यथा- "यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः" (गी.अ. 3.9)

"यज्ञो वै विष्णुः"।तै.सं(1.7.4 ." **इत्यादि ।**

कात्यायन ने अपने श्रौतसूत्र में उल्लेख किया है कि देवताओं के उद्देश्य से द्रव्यों का त्याग ही यज्ञ है। अर्थात् इन्द्रादि देवताओं को दही, चावल, जौं और सोमादि सामग्री से समिधा में आहुति रूपी त्याग से स्वयं के स्वत्व की निवृत्ति हो जाती है। जैसा कि कात्यायन श्रौत सूत्र में वर्णन है **द्रव्यं दधिसोमव्रीहियवादि, देवता अग्नीन्द्रादिः, त्यागः तदुद्देशेन क्रियमाणः स्वत्वनिवृत्यनुकूलो व्यापारः। इदमेव यागस्वरूपम्।** (1.2.2) श्रुति प्रतिपादित यज्ञों को श्रौत यज्ञ कहते हैं। अतः वैदिक ऋषियों की तरह प्रकृति और मानव के कल्याण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए क्योंकि मानव का समस्त जीवन ही यज्ञ है, जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् में उल्लेख है **पुरुषो वाव यज्ञः**। (3.16) यज्ञ के माध्यम से हमारे अंदर पवित्रता की भावनाएँ जन्म लेंगी। जिससे हमारे चित्त का पर्यावरण शुद्ध होगा और अशांति दूर होगी। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें जल, वायु, अन्न, आदि की आवश्यकता होती है। यदि सूर्य न हो, शीतलता, अन्न व औषधि में जीवन-शक्ति डालने वाला, रस भरने वाला चन्द्रमा न हो, बादल न हो, वर्षा न हो, ऋतुओं की अनुकूलता न हो, वृक्ष न हो, फल-फूल न होतो हमारा जीवन कैसे चलेगा। यज्ञ करने से ये सब शुद्ध होंगे। इनके शुद्ध होने से हमारा जीवन शुद्ध होगा।

ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कहा गया है कि **'अग्निर्वै देवानां मुखम्"** सभी देवताओं का मुख अग्नि है। क्योंकि अग्नि में डाले हुए पदार्थ, पदार्थ-विज्ञान के अनुसार कभी नष्ट नहीं होते अपितु रूपातंरित होकर, सूक्ष्म होकर लाखों गुणा शक्तिशाली हो जाते हैं। सूक्ष्म होकर अन्तरिक्ष में फैल कर अन्तरिक्ष व द्युलोक में व्याप्त पर्यावरण को भी शुद्ध करने में सक्षम हो जाते हैं। " **इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतः।**(यजुर्वेद 23.62) **अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिर्ब्रह्मायं वाचः**

परमम्... ॥ "। (अ.वे.9.10.14) ऐतरेय ब्राह्मण के वचन है कि 'यज्ञ जनता के कल्याण के लिए किया जाता है। यज्ञ में लोककल्याण की भावना मुख्य है, अतः लोककल्याण की दृष्टि से यज्ञों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है, जो यज्ञ के द्वारा प्राप्त न हो सके। यथा- **'यज्ञोऽपि तस्यै जनतायै कल्पते।' ऐ.ब्रा.** (1.2.3)

यज्ञ का आध्यात्मिक महत्त्व- यज्ञ का उद्देश्य केवल मात्र जलवायु शुद्ध करना ही नहीं है। यज्ञ में जिन वेद-मन्त्रों से आहुतियाँ दी जाती है। उनसे पूर्व 'ओम्' अन्त में 'स्वाहा' तथा 'इदन्न मम' ये शब्द हमें प्रेरणा देते हैं कि संसार का मूल ओम् है और सु-आह अर्थात् हम अच्छा बोलें। 'इदन्नमम' अर्थात् संसार में कोई भी वस्तु हमारी नहीं है।

1.5. **यज्ञ के अङ्ग** - स्नान, दान, होम एवं जप। अथ दशविधस्नानम्

कर्ता कर्मदिने प्रातरुत्थाय प्रातः स्मरणं कृत्वा शौच दन्तधावन पूर्वकं स्नात्वा संध्यादिनित्यकर्म निवृति पूर्वकं नदीतडागादिकं गत्वा सुप्रक्षालितशरीरे स्नानोपकरणानि संस्थाप्य ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रं जलं गत्वा कुशपवित्र हस्तौ बद्धशिख आचमेत्। -शौचादि उठकर प्रातः स्मरण चरणवन्दन करके यजमान प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में) नित्यक्रियाओं से निवृत होकर संध्यादि नित्यकर्म करके गुरु से आशीर्वाद ग्रहण करें तथा सपत्नीक यजमान नदीतड़ागादि जल स्थान पर जाकर दशविध स्नान करें।

पवित्रीकरणम् - (यजमान के हाथों का प्रक्षालन करवाएँ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः।।

इति पठित्वा आत्मानं पूजासामग्रीञ्च प्रोक्षणं कुर्यात् (पूजा सामग्री व स्वयं के जल के छींटे दे)

ततस्त्रिकुशपवित्रीधारणम् -

(यजमान अपनें दोनों हाथों की अनामिका में पवित्री धारण करें)

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।।

आचमन प्राणायाम -

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः,

ॐ हृषीकेशाय नमः। हस्तौ प्रक्षाल्य (हाथों का प्रक्षालन करें) त्रिवारं गायत्रीं जपेत् (यजमान आचमन एवं प्राणायाम करें।

सङ्कल्पम्- यजमान पत्नी सहित दाहिने हाथ में रोली, चावल, पुष्प, दूर्वा, जल और द्रव्य लेकर संकल्प करें

यजमानः सपत्नीकः स्वदक्षिणहस्ते गन्धाक्षतपुष्पदूर्वाजलद्रव्यञ्चादाय -

ॐदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम समस्तपापक्षय पूर्वकं विष्णुप्रीत्यर्थममुककर्माधिकारप्राप्तर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषोपशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च प्रायश्चित्ताङ्गभूतान्यादौ भस्मादिभिर्दशविधस्नानानि करिष्ये।

1. **भस्मस्नानम्-** यजमानः वामहस्तेयज्ञियभस्मं गृहीत्वा पश्चादुदकमिश्रणानन्तरं दक्षिणहस्तेन समर्च्य अभिमन्त्रयेत्। यजमान बाएं हाथ में भस्म लें तथा थोड़ा जल मिलाकर दाहिने हाथ से नीचे लिखे मन्त्र द्वारा मर्दन करें।

तत्र मन्त्र - ॐअग्निरिति भस्म। ॐवायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐस्थलमिति भस्म। ॐव्योमेति भस्म। ॐ सर्वं ᳪ हवा इदं भस्म। ॐ मनएतानि चक्षूंषिभस्मानि।। इत्याभिमन्त्रः।

अभिमन्त्रित करके सिर, मुख, हृदय, हाथ तथा पैरों में भस्म लेपन करके स्नान करें।

ॐईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे ऽअस्तु सदाशिवोम्।। ॐनमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।। यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादि सञ्चयम्। तथामे दह्यतांपापं कुरु भस्मशुचेशुचिम्।।

2. **मृत्तिकास्नानम्-** ततः यजमानः तीर्थस्थानस्यमृत्तिकामादाय स्नानं कुर्यात्। फिर यजमान तीर्थस्थान की रज लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नख तक मलकर स्नान करें।

ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ᳪसुरेस्वाहा।।

मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्पेनाभिवन्दिता। मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

3. गोमयस्नानम्- ततः यजमानः शुद्धगोमयमादाय गोमयस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान शुद्धगोमय लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नखतक गोमय मलकर स्नान करें।

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयूषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।

अग्रमग्रं चरन्तीनामौषधीनां रसं वने। तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।।

4. पञ्चगव्यस्नानम्- ततः यजमानः पञ्चगव्यमादाय पञ्चगव्यस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान पंचगव्य लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से नख पर्यन्त लगाकर स्नान करें।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ᳪ सर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठ दशाङ्गुलम्।।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः समन्वितम्।

सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्।।

तत्पश्चात् यजमान गोरज (गोशाला की मिट्टी) लेकर शिखा से नाभि तक तथा नाभि से पैरों तक मलकर स्नान करके पुनः आचमन करें।

ॐआयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।। गवां खुरेण निर्द्धतं यद्रेणु गगने गतम्। शिरसा तेन संलेपे महापातकनाशनम् ।।

6. धान्यस्नानम्- ततः यजमानः धान्यमादाय धान्यः स्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान धान्य लेकर शिखा से पैरों तक उवटन कर स्नान करें तत्पश्चात् पुनः आचमन करें।

ॐधान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणाय त्त्वोदानाय त्त्वा व्यानाय त्त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्त्वा महीनां पयोऽसि ।।

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्। तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु।।

7. फलस्नानम् - ततः यजमानः फलस्नानं कुर्यात्।

तत्पश्चात् यजमान फल को जल में डालकर उसी जल से स्नान कर पुनः आचमन करें। ॐयाः **फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो**

मुञ्चन्त्व ँ हसः।।

वनस्पतिरसोदिव्यः फलपुष्पवृतः सदा। तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनंतकम्।।

8. **सर्वौषधीस्नानम्-** ततः यजमानः सर्वौषधीमादाय सर्वौषधिः स्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान सर्वौषधि लेकर शिखा से पैरों तक उबटन के पश्चात् स्नान कर पुनः आचमन करें।

ॐओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन्पारयामसि।।

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः। दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्।।

9. **कुशोदकस्नानम्** - ततः यजमानः कुशोदकस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान कुशा के जल से स्नान करें।

ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

कुशमूलेस्थितोब्रह्मा कुशमध्येजनार्दनः ।

10. **हिरण्यस्नानम्** - ततः यजमानः हिरण्योदकस्नानं कुर्यात्। तत्पश्चात् यजमान सुवर्ण को जल में डालकर उस जल से स्नान करें।

ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानिपश्यन् ।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ।।

इस प्रकार यज्ञ करने से पूर्व विद्वानों को स्नान करना चाहिए।

इकाई 2. स्मार्त्त यज्ञ के अन्तर्गत सप्त पाक संस्था का परिचय

यज्ञ की प्रमुख रूप से तीन संस्थाएँ है। पाकयज्ञ संस्था, हविर्यज्ञ संस्था एवं सोमयज्ञ संस्था। गृह्याग्नि में सम्पादित होने वाले यज्ञ- होमों में पके हुए अन्नादि की आहुतियाँ दी जाती है, उन्हें पाकयज्ञ कहते हैं। यह कृत्य गृहस्थों लिए नित्य कर्म हैं। यथा- औपासन होम, वैश्वदेव, अष्टका श्राद्ध, मासिकश्राद्ध, श्रवणाकर्म, पार्वण, शूलगव आदि सात पाकयज्ञ संस्थाएँ हैं।

इस यज्ञ में गार्हपत्य अग्नि में चरू, पुरोडाश इत्यादि से आहुतियाँ दी जाती है। यथा- अग्निहोत्र, अग्न्याधान, दर्शपूर्णमास, आग्रायण, पुनराधान, चातुर्मास्य, निरूढ- पशुबन्ध तथा सौत्रामणि आदि ।

इस यज्ञ में तीन प्रकार की अग्नि में देवताओं को सोमरस की आहुतियाँ प्रदान की जाती है, उसे सोमयज्ञ कहते है। 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार प्रमुख यज्ञ- अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र व आप्तोर्याम इत्यादि लेकिन प्रमुख रूप से अग्निष्टोम को सोमयज्ञों की प्रकृति माना जाता है।

उपासना के निमित्त अग्नि के परिग्रह को अग्न्याधान कहते हैं। अग्नि परिग्रह के दो प्रकार हैं। श्रौत अग्नि परिग्रह और स्मार्त अग्नि परिग्रह। स्मार्त अग्नि के परिग्रह को स्मार्त्ताधान कहते हैं। स्मार्त्ताधान के बिना श्रौताधान नहीं हो सकता। अतः स्मार्त्ताधान का प्रथम परिचय आवश्यक है।

उपनयन संस्कार के पश्चात् विधिवत् वेदाध्ययन कर लेने पर आचार्य की अनुज्ञा से ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार किया जाता है। तब वह स्नातक विवाह करके द्वितीय गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। सहधर्मिणी पत्नी के साथ ही अग्नि का परिग्रह किया जा सकता है, अन्यथा नहीं ।

पाणिग्रहण संस्कार होने पर द्विज, अग्नि के आधान का अधिकारी हो जाता है। परिस्थितिवश यदि उस समय वह अग्निपरिग्रह के सौभाग्य से वञ्चित रह जाय तो शास्त्रकार ने उसे एक अवसर और दिया है। वह समय है कुटुम्ब में विभाजन होने पर जिस समय वह अपने दाय भाग को ग्रहण कर अपना स्वतन्त्र चूल्हा जलाता है, उस समय भी वह अग्नि का परिग्रह कर सकता है। स्मार्त्ताग्नि का परिग्रह कर लेने पर

उसे स्मार्त्ताग्नि की उपासना करनी होती है। आवसथ्य अग्नि (गृह्य अग्नि, औपासन अग्नि, स्मार्त्त अग्नि) अब वह स्मार्त्ताग्नि पर की जाने वाली सात पाक संस्थाओं का अनुष्ठान करने का अधिकारी हो जाता है।

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः।

अग्ने गृहपते भि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व ॥ (शु. य.3.39)

यह गार्हपत्याग्नि प्रत्येक गृहस्थ का गृहपति है। वह सन्तान के लिए धन प्रदाता है। हे गार्हपत्याग्ने आप हमें द्योतमान स्वर्णादि सम्पत्ति और शत्रु को अभिभूत करने का बल प्रदान करता है। अतः यह प्रत्येक गृहस्थ को करना चाहिए।

अग्न्याधानकाल –स्मार्त्त अग्न्याधानकाल के विषय में गृह्यसूत्रों में वर्णित विधान इस प्रकार हैं-

❖ विवाह के समय आवसथ्य अग्नि का आधान करते हैं।

आवसथ्याधानं दारकाले (पा. गृ. 1.2.1)

भार्यादिरग्निर्दायादिर्वा । (गौ.ध. सू. 1.5.6)

जायाया वा पाणिंजिगृक्षन् । (गो. गृ.सू. 1.1.8)

❖ भाईयों के भूमि या सम्पत्ति विभाजन के समय औपासन अग्नि का आधान करते हैं।

दायाद्यकाल एकेषाम् (पा. गृ. 1.2.2)

❖ ब्रह्मचारी का सम्पूर्ण वेदाध्ययन पूर्ण होने पर गुरुकुल में अंतिम समिधा आधान के समय स्मार्त्त अग्नि आधान का विधान हैं।

ब्रह्मचारी वेदमधीत्यमन्त्यां समिधमभ्याधास्यन्। (गो.गृ.सू. 1.1.7)

❖ स्मार्त्त अग्नि के लिए शुभ काल उत्तरायण, शुक्लपक्ष में मध्याह्न से पूर्व शुभकाल में तथा तिथि नक्षत्र एवं पर्व विशेष का विचार कर अग्न्याधान करें यथा-

उदगयने पूर्वपक्षे पुण्येऽहनि प्रागावर्त्तनादन्हः कालं विद्यात्। (गो.गृ.सू. 1.1.3)

तिथि नक्षत्र पर्व समावाये । (गो.गृ.सू. 1.1.13)

❖ पूर्णिमा और अमावस्या तिथियों में अग्न्याधान करें।

दर्शे वा पौर्णमासे वाऽअग्निसमाधानं कुर्वीत् । (गो.गृ.सू. 1/1/14)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

❖ पाणिग्रहण तथा अन्य कार्यों के निमित्त अग्नि को समिधाधान के अन्त में सुरक्षित करना चाहिए।

स यदेवा अन्त्यां समिधमभ्यादधाति जायाया वा पाणिं जिघृक्षन् जुहोति तममभिसंयच्छेत् ।

(गो.गृ.सू. 1.1.20)

स्मार्त्त अग्नि स्थापना विधि- अग्नि स्थापना के समय जल परमावश्यक है जो गृहादि से दूर हो, वहाँ से जल लाकर अग्नि स्थान पर आगार का लेपन कर समतल कर लेना चाहिए। उसके उपरान्त जल से परिसमूहन करके मध्य पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा में तीन रेखा और दक्षिण दिशा से उत्तर तक प्रादेश मात्रा में 3 और रेखाओं को खींचकर जल से अभ्युक्षण करने पर वह स्थान "स्थण्डिल' ' कहलाता है।यथा **अनुगुप्ता अप आहृत्य, प्रागुदक प्रवणं देशं समम् वा परिसमूह्य उपलिप्य, मध्यत: प्राचीं लेखान्मुल्लिख्य उदीञ्च संहतां पश्चात् मध्ये प्राचीस्तिस्त्रउल्लिख्य अभ्युक्षेत्। (गो. गृ.सू.**1.1.19)

यह लक्षणावृत् विधि है। यदि भूमि में अग्नि कुण्ड नहीं बन सके तो सदैव स्थण्डिल निर्माण कर होम कर सकते हैं।

लक्षणावृदेशासर्वत्र (गो. गृ.सूत्र 1.1.10)

भू भुंव: स्व: इस मन्त्र का उच्चारण कर स्वयं के मुख की ओर अग्नि की स्थापना करना चाहिए।

भूर्भुव:स्वरित्यभिमुखमग्निं प्रणयन्ति (गो. गृ.सू.1.1.11)

अग्न्याधान के ज्ञान पश्चात् अब इन सात पाक संस्थाओं का अध्ययन करेंगे-

सप्त पाकसंस्था-औपासनहोम, वैश्वदेव, पार्वण, अष्टकाश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, श्रवणाकर्म और शूलगव ये सप्त पाक संस्थाएँ हैं। इनका अनुष्ठान परिगृहीत स्मार्त्ताग्नि पर किया जाता है, इनका अध्ययन यहाँ करेंगे।

2.1. **औपासन होम-** स्मार्त्ताग्नि पर प्रतिदिन सायङ्काल और प्रातः काल दी जाने वाली आहुति को औपासन- होम कहते हैं। **सायमाहुत्युपक्रम एवात ऊर्ध्वं गृह्येऽग्नौ होमो विधीयते । (गो.गृ.सू.** 1.1.23**)**

यह हवन सायङ्काल से प्रारम्भ होकर प्रातःकाल दोनों समय दही और अक्षतों से स्मार्त्ताग्नि पर किया जाता है। **तेन चैवास्य प्रातराहुतिर्हुता भवतीति।** (गो.गृ.सू. 1.1.22) जैसा कि पारस्कर गृह्यसूत्र में यज्ञ सामग्री का वर्णन है -**दध्ना तण्डुलैरक्षतैर्वा** (1.8.3) सायङ्काल के देवता अग्नि है और सायं काल में दो

आहुतियाँ दी जाती है यथा- प्रथम- अग्नये स्वाहा मन्त्र से तथा मौन होकर द्वितीय आहुति स्विष्टिकृते स्वाहा। **अग्नये स्वाहेति पूर्वां तूष्णीमेवोत्तरां मध्ये चैवा पराजितायाश्चैव दिशीति सायम्।**

(गो.गृ.सू. 1.3.9) प्रातःकाल के देवता सूर्य हैं और इस समय दो आहुतियाँ दी जाती है। प्रथम आहुति **सूर्याय स्वाहा** मन्त्र से द्वितीय आहुति मौन होकर **स्विष्टकृते स्वाहा। यथा- अथ प्रात: सूर्य्याय स्वाहेतिपूर्व्वां, तूष्णीमेवोत्तरां मध्ये चैवापराजितायाश्चैव दिशि।**(गो.गृ.सू.1.3.10) दोनों ही समय स्विष्टकृत् स्थानीय प्रजापति संज्ञक देवता को द्वित्तीय आहुति दी जाती है। सायङ्काल और प्रातःकाल दोनों समय के कर्म को मिलाकर एक कर्म माना गया है। अर्थात् सायंकाल के प्रारम्भ समय से लेकर प्रातःकाल पर्यन्त एक ही कर्म के रूप में परिगणित होता है, अतः सम्मिलित दोनों का एक फल है।

अतः दोनों समय के हवन का हविर्द्रव्य और हवनकर्ता एक ही होना चाहिए। यह कृत्य सपत्नीक यजमान यावज्जीवन करे। स्मार्त्ताग्नि को आवसथ्याग्नि भी कहते हैं। इसी अग्नि का कुछ अंश ले जाकर पाकशाला में जो पाक तैयार होगा वही यजमान और यजमान पत्नी का भोजन होगा। पुनः पाकशाला से अग्नि को लाकर आवसथ्याग्नि में मिलाना चाहिए।

औपासन होम काल औपासन होम सूर्यास्त से पूर्व व प्रात सूर्योदय से पूर्व :होम करना चाहिए।

पुरास्तमयादग्निं प्रादुष्कृत्यास्तमिते सायमाहुतिं जुहुयात्।

पुरोदयात् प्रात: प्रादुष्कृत्योदितेऽनुदिते वा प्रातराहुतिं जुहुयात् । (गो.गृ.सू. 1.1.28)

औपासन होम के द्रव्य– निष्काम रुप में निम्न आहुति पदार्थों का स्वरूप बताया गया है ।

तेल, दही, दुग्ध, सोम, लपसी, भात, घी, अक्षत, फल, जलादि दस हविः दव्यों का निर्देश है यथा-

तैलं दधि पय: सोमो यवागूरोदनं घृतम्,

तण्डुला: फलमापश्च दश द्रव्याण्यकामत: ।। (समार्तोल्लास)

2.2. **वैश्वदेव** - प्रातःकालीन आह्निक कृत्य और औपासन होम करके वैश्वदेव किया जाता है। इस वैश्वदेव अनुष्ठान में स्मार्त्ताग्नि पर ओदन की आहुति दी जाती है और समस्त देवों के निमित्त आहुतियाँ और पितरों के लिए बलि प्रदान होता है। माध्यन्दिन शाखा के अनुसार प्रातःकाल

में यह अनुष्ठान करना चाहिए लेकिन अन्य शाखाओं में सायं और प्रातः दोनों समय के लिए अनुष्ठान का विधान है अर्थात् शाखा भेद या क्षेत्र विशेष के अनुसार ग्रहण कर लेना चाहिए। यथा-

अथातः पञ्चमहायज्ञाः। वैश्वदेवादन्नात्पर्युक्ष्य स्वाहाकारैर्जुहुयात्, पितृभ्यः स्वधा नमः यथार्ह भिक्षुकानतिथींश्च सम्भजेरन्। बालज्येष्ठागृह्या यथार्हमश्नीयुः। पश्चाद् गृहपतिः, पत्नी च। (पा. गृ.2.9.1-14) **बलिकर्म भूतयज्ञः। स्वधा पितृयज्ञः। होमो देवयज्ञः। स्वाध्यायो ब्रह्मयज्ञः। अतिथिसत्क्रिया मनुष्ययज्ञः। एते पञ्चमहायज्ञा अहरहः कर्त्तव्या नित्यत्वात्।**(या. स्मृ. मि. 1.102) अर्थात् इसका अपर नाम पंच महायज्ञ है। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि-देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि कर्म गृहस्थ के नित्य कर्म हैं(श.ब्रा.11.5.5.1)।

गृहस्थों के चूल्हा जलाते समय, अनाज पीसते समय, सफाई करते समय, ओखक से अन्न कूटते समय एवं जलपात्र के नीचे कीड़ेमकोड़े मरने के- पाप से निवृत्ति के लिए स्नान, संध्या, पूजा, तर्पण तथा सप्त पाक संस्था एवं देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि गृहस्थ के नित्य कर्म हैं। यथा-

पञ्चसूना गृहस्थस्य चूल्ली पेषण्युपस्करः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च वध्यते यास्तु बाहयन्॥
तासांक्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्चक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ (म.स्मृ. 3.68-70)

1. ब्रह्मयज्ञ – नित्य संध्योपासना के उपरान्त अध्ययन और अध्यापन करना।
2. पितृयज्ञ – पितरों का तर्पण।
3. देवयज्ञ –सायं एवं प्रातः औपासन होम से देवताओं को आहुतियाँ देना।

वैश्वदेवादि के निमित्त पकाएँ गए अन्न में से स्मार्त्त अग्नि में चार आहुति नित्य दें। यथा - **ब्रह्मणे स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, कश्यपाय स्वाहा, अनुमतये स्वाहा।**

वैश्वदेवादन्नात् पर्युक्षत स्वाहाकारैर्जुहुयात् ।

ब्राह्मणे, प्रजापतये गृह्याभ्यः कश्यपायाऽनुमतये इति। **(पारस्कर गृह्यसूत्र** 2.9.2)

पुनः जल देवता हेतु तीन आहुति प्रदान करें। यथा- **पर्जन्याय स्वाहा, अदभ्यः स्वाहा, पृथिव्यै स्वाहा।**

भूतगृह्येभ्यो मणिके त्रीन् पर्जन्यायादभ्यः पृथिव्यै। **(पारस्कर गृह्यसूत्र** 2.9.3)

पुनःद्वार देवता के लिए दो आहुति प्रदान करें। यथा- **धात्रे स्वाहा, विधात्रे स्वाहा।**

धात्रे विधात्रे च द्वार्ययोः।(पारस्कर गृह्यसूत्र 2.9.4)

4.भूतयज्ञ– बलि वैश्वदेव करना।

5. **मनुष्य यज्ञ**– अतिथियों को भोजन कराना।

विश्वेदेवयाग के पश्चात् पकाए गए अन्न में से अतिथि के अन्न के ऊपर 'हन्तत का उच्चारण जल से पोषण कर उस अन्न को ब्राह्मण को दें।

उद्धृत्याग्रं ब्राह्मणायावनेज्य दद्याद्धन्तत इति। **(पारस्कर गृह्यसूत्र** 2.9.11)

भिक्षुकों और अतिथियों को यथा शक्ति भोजन कराएँ।

यथार्हं भिक्षुकामतिथींश्चसभ्यजेरन्।(पारस्कर गृह्यसूत्र 2.9.12)

गृह में स्थित सदस्यों में से सर्वप्रथम बालकों को एवं वृद्धों को भोजन कराएँ।

बालज्येष्ठागृह्या यथार्हमश्नीयुः।(पारस्कर गृह्यसूत्र 2.9.13)

अन्त में गृहपति एवं पत्नी भोजन करें।

पश्चात् गृहपतिः पत्नी च। पूर्वो वा गृहपतिः। **(पारस्कर गृह्यसूत्र** 2.9.14-15)

2.3. **पार्वणविधि**- अमावस्या के दिन पितृ, पितामह, प्रपितामह के निमित्त किया जाने वाला नित्य श्राद्ध पार्वण के नाम से प्रसिद्ध है। **अपरपक्षे श्राद्धं कुर्वीत** ।(श्रा. सू. 1.1) अर्थात् पितृपक्ष में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही एवं प्रपितामही को पिण्डदान किया जाता है। मातृपक्ष में मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह एवं मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही को पिण्डदान का विधान है।

2.4. **अष्टकाश्राद्ध**- हेमन्त और शिशिर ऋतु में, मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा के अनन्तर चार अष्टमी को कर्तव्य श्राद्ध अष्टकाश्राद्ध के नाम से प्रसिद्ध है, इनमें इन्द्र, विश्वेदेवा, प्रजापति और पितृ निमित्तक अपूप और शाक से अनुष्ठान होता है। विश्वेदेव माघ कृष्ण अष्टमी को, प्रजापति फाल्गुन कृष्ण अष्टमी पर और पितरों हेतु चैत्र कृष्ण अष्टमी पर अनुष्ठान करना चाहिए। यथा- **अष्टकास्तिस्रो भवन्ति। वर्षे च तुरीयाष्टकेति । (पा.गृ.क.भा.3.3.1) प्रथमाष्टका आग्रहायणी समनन्तरपक्षाष्टम्यां भवति । मध्यमाष्टका पौषस्य कृष्णाष्टम्याम् । मध्यावर्षे तुरीया शाकाष्टका । पा. गृ. ज. भा. 3.3.1 । प्रथमा ऐन्द्री। द्वितीया वैश्वदेवी...... ।**

2.5. **मासिक श्राद्ध** - पितरों के उद्देश्य से प्रत्येक मास किया जाने वाला श्राद्ध मासिक श्राद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। यथा- **मासि मासि वोऽशनम् । (श्रौ सू.1.1.)तथा च श्रुतिः अथैनं पितरः प्राचीनावीतिन इति । अनेन च श्रुत्युक्तहेतुना, अपरपक्षेऽमावास्यायमवश्यकर्त्तव्यत्वमुक्तम् ।(श्रा. का. 1.23)** यह एकोद्दिष्ट श्राद्ध है। अर्थात् एक को लक्ष्य कर विधीयमान श्राद्ध को एकोद्दिष्ट कहा जाता है।

2.6. **शूलगव**- स्वर्ग, पशु, पुत्र, धन, यश तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति हेतु शूलगव संज्ञक अनुष्ठान में रुद्र देवता के निमित्त हवन किया जाता है। **पशव्यो पुत्र्यो धन्यो यशस्य आयुष्यः। रौद्रं पशुमालभेत् । साण्डम्। (पा. गृ. 3.8,1-3)** स्थालीपाक से इसका अनुष्ठान करते हैं। यथा- **स्वयं ईशानाय स्थालीपाकं श्रपयित्वा। (आ. गृ. 7,9.13)**

स्मार्त्त और श्रौत नाम से याग दो प्रकार के होते है। '**भार्यादिरग्निर्दायादिर्वा**' इस पारस्कर गृह्यसूत्र के वचन के आधार पर पाणिग्रहण संस्कार के साथ स्मार्त्ताग्नि का परिग्रह विहित है। स्मार्त्ताग्नि को आवसथ्याग्नि भी कहते हैं। इस अग्नि पर प्रतिदिन सायङ्काल और प्रातःकाल औपासन हवन किया जाता है। मध्याह्न के समय वैश्वदेव तथा प्रत्येक प्रतिपदा को ओदन से स्थालीपाक कृत्य होता है। सातों पाकसंस्था का अनुष्ठान इसी अग्नि पर किया जाता है। **स एवास्य गृह्योग्निर्भवति**। (गो. गृ.सू.1/1/21) इसके अनन्तर '**जातपुत्रः कृष्ण केशोऽग्निमादधीत**' इस वचन के आधार पर प्रथम का पुत्र-जन्म होते ही श्रौताग्नि के परिग्रह का अधिकार मिल जाता है। स्मार्त्ताग्नि पर होने वाले अनुष्ठानों को स्वयं भी किया जा सकता है।

2.7. **श्रवणाकर्म**-इस कृत्य में सायङ्काल के समय सर्प की बलि दी जाती है। इस अनुष्ठान को श्रावण की पौर्णमासी को करने का विधान है। अर्थात् श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से प्रारम्भ कर मार्गशीर्ष की पौर्णमासी तक प्रतिदिन सायंकाल सर्पों के निमित्त किया जाता है। यथा- **श्रावणशुक्लपञ्चदश्यां भवति।** (पा. गृ. ग. भा. 2.14.1)**प्रथमप्रयोगे मातृ पूजापूर्वकं नान्दीमुखं श्राद्धं कृत्वा आवसथ्ये कर्म कार्यम्।** (पा. गृ. 2.14..1) **अथातः श्रवणाकर्म श्रावण्यां पौर्णमास्याम्।** (पा. गृ. 2.14. 1-2) । इसके अन्तर्गत स्थालीपाक तैयार कर अक्षतधान्य को पुरोडाश के रूप में पकाकर प्रोक्षण आदि करना चाहिए। तत्पश्चात् **अपश्वेतपदाजहि.** प्रभृति मन्त्र से घृत की आहुतियाँ प्रदान की जाती हैं। उसके पश्चात् चरु की चार आहुतियाँ प्रदान करने का विधान है। विष्णु, श्रवणा आदि को समन्त्रक आहुति प्रदान करके अनन्तर **धानावन्तं.** मन्त्र के द्वारा पिष्ट धान्यों की एक आहुति तथा घृत मिश्रित सत्तू की आहुति त्रय सर्पों के निमित्त प्रदान करने का विधान है।**(पारस्कर गृह्यसूत्र** 2.13.1)

इकाई 3. ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र परिचय

ऋचां स्तुतीनां वेदः ऋग्वेदः। ऋचाओं स्तुतियों का वेद ऋग्वेद है। प्रमुखरूप से इसमें स्तुतियाँ उपनिबद्ध हैं। विभिन्न देवों की इसमें बहुत ही भव्य मनोरम प्रार्थनाएँ की गई हैं और इस प्रकार से यह वेद प्रकृति

की उपासना है। प्राकृतिक शक्तियों को देवत्व प्रदान किया गया है और अग्नि-इन्द्र-वरुण-विष्णु-अश्विना-सविता-उषस् इत्यादि के रूप में प्राकृतिक शक्तियों की उपासना यहाँ पर है।

ऋग्वेद वेद का सामान्य परिचय

वेद	उपलब्ध शाखा	ब्राह्मण	उपनिषद्	शिक्षा-प्रातिशाख्य	विशिष्ट विवरण
ऋग्वेद	शाकल शांखायन	ऐतेरय ब्राह्मण शांखायन ब्राह्मण	ऐतेरय उपनिषद् कौषीतकि उपनिषद्	पाणिनीय शिक्षा ऋक्प्रातिशाख्य	विषय- शास्त्र एक श्रुति से) पाठ करने वाली ऋचाएँ(/स्तुति ऋत्विक- होता मण्डल-10, सूक्त-1028, अष्टक- 8, वर्ग-2024 आचार्य- पैल, देवता- अग्नि, उपवेद-आयुर्वेद

दो प्रकार के कर्म हैं। श्रुति लक्षण, आचार लक्षण। वैतानिक अग्निहोत्रादि कर्म श्रुति लक्षण एवं गृहस्थाश्रम में साधित अग्निहोत्रादि (गृह्याग्नि) कर्म गृह्य लक्षण अर्थात् पाणिग्रहणादि संस्कार। यस्मिन्नग्नौ पाणि गृह्णीयात् स गृह्यः।।(खा. गृ.सू.(1.5.9) अर्थात् जातकर्मादि गृह्यकर्मों एवं संस्कारों का विधान गृह्यसूत्रों में वर्णित है।

गृहस्थ-जीवन में जो भी धार्मिक कार्य संस्कार आदि का विधान है उसके अनुष्ठान की विधि एवं कर्तव्याकर्तव्यत्व का निरूपण जिन कल्प-ग्रन्थों में सूत्र रूप में वर्णित है उन्हें 'गृह्यसूत्र' कहते हैं। इन्हीं गृह्यसूत्रों का परिवर्धित रूप कालान्तर में स्मृति ग्रंथों के रूप में हमें प्राप्त होता है।

गृहस्थ-जीवन से संबंधित गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त जितने भी क्रियाकलाप है उन सबका सविस्तार अनुष्ठानविधि गृह्यसूत्रों में वर्णित है। जैसे वैदिक यागादि कर्म है ठीक उसी प्रकार गृह्य यागादि कर्म भी हैं। गृह्य यज्ञ पार्वणयज्ञ, अष्टका आदि यज्ञ गर्भाधानादि संस्कार पाक् यज्ञ हैं। जैसा कि आश्वलायन ने कहा हैं

हुता अग्नौ हूयमानाः अनग्नौ प्रहुता ब्राह्मणभोजने ब्रह्मणिहुता। (पा.य. प्र.3)

अर्थात् अग्नि में समिधा डाल कर किया जाने वाले यज्ञ 'हुत' कहा जाता है। ये पार्वण आदि पाकयज्ञ 'हुत' संज्ञक कहलाते हैं।

इनके अतिरिक्त पाँच महायज्ञों - देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, महायज्ञ और मनुष्ययज्ञ का भी गृह्यसूत्रों में विधान है। पारस्कर गृह्यसूत्र में चार पाक यज्ञों का वर्णन मिलता है यथा-

चत्वारः पाकयज्ञाः- हुतोऽहुतः प्रहुतः प्राशितः इति (1.4.1)

हुत यज्ञ- सायं और प्रातःकाल होम।

अहुत- बलि विहीन कर्म, जैसे प्रस्तरोहण।

प्रहुत- होम और बलिहरण जैसे- पक्षादि कर्म।

प्राशित- केवल ब्राह्मण भोजनादि कर्म।

गृह्यसूत्रों में पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, उपनयन, समावर्तन, आठ प्रकार के विवाह (ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच) और अन्त्येष्टि इत्यादि 16 संस्कारों के विधि-विधान वर्णित हैं। आश्वलायन गृह्यसूत्र, शांखायन गृह्यसूत्र, मानव गृह्यसूत्र, बौधायन गृह्यसूत्र, आपस्तम्ब गृह्यसूत्र, हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र, भारद्वाज गृह्यसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र, द्राह्यायण गृह्यसूत्र, गोभिल गृह्यसूत्र, खदिर गृह्यसूत्र, कौशिक गृह्यसूत्र आदि मुख्य गृह्यसूत्र हैं। ऐसे व्यक्ति जो वेद-पुराणों के पाठक, आस्तिक, पंचदेवों (गणेश, विष्णु, शिव, सूर्य व दुर्गा) के उपासक और गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले होते हैं,

उन्हें स्मार्त्त कहते हैं। स्मार्त, श्रुति और स्मृति में विश्वास रखता है। 'स्मार्त ब्राह्मण', स्मृति-ग्रन्थों का विशेष अध्ययन करते हैं।

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र परिचय-

आश्वालायन गृह्यसूत्र एवं 'शांखायन गृह्यसूत्र, 'शौनक गृह्यसूत्र ये ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र हैं।

उपलब्ध गृह्यसूत्र-

वेद	गृह्यसूत्र
ऋग्वेद	आश्वलायन, शांखायन, शौनक

3.1. **आश्वालायन गृह्यसूत्र के प्रथम अध्याय के विषयों का परिचय-** आश्वालायन ऐतरेय ब्राह्मण से सम्बन्धित है, इसमें चार अध्याय हैं, जिसके पहले अध्याय में विवाह, गर्भाधानादि संस्कारों और पार्वण, पशुयज्ञ आदि का वर्णन है। आश्वलायन अपने गृह्यसूत्र में प्रथम अध्याय के अष्टम खण्ड में पार्वण का 29 कारिकाओं में विस्तार से वर्णन करते है। जैसा कि आश्वलायन वचन हैं-**अथ पार्वणः स्थालीपाकः।** अर्थात् पक्ष संधि पूर्णिमा या अमावस्या में किया जाने वाला हविः कर्म पार्वण कहलाता है। इस अनुष्ठान में स्थाली पाक अर्पित किया जाता है।

प्रथम खण्ड के विषयों का परिचय- गृह्य कर्म व्याख्या प्रतिज्ञा , पाकयज्ञ प्रकार, पाकयज्ञों के हुतप्रहुतादि भेदत्रय , पाकयज्ञ प्रशंसा, पाकयज्ञों का स्वरूप।

द्वितीय खण्ड- सायम्प्रातः सिद्धहविष्यहोम, होम मन्त्र, स्वाहाकार बलिहरण, पितृयज्ञ।

तृतीय खण्ड- वक्ष्यमाण कर्म होमविधि, पवित्राभ्यामाज्यस्योत्पवन, पवित्र लक्षण, उत्पवन प्रकारस्तन्मन्त्र, आज्यहोम में परिस्तरण का वैकल्पिकत्व, पाकयज्ञेष्वाज्यभागयोर्वैकल्पिकत्व, पाकयज्ञों में ब्राह्मण का वैकल्पिकत्व।

चतुर्थ खण्ड- चौलादिकर्म कालविधान, विवाह का सार्वकालिकत्व, आज्यहोम, होमविधान, अष्ट आहुतियों का समुच्चय विधान, प्रथम कुलपरीक्षा, वरगुण, कन्यागुण, लक्षण दुर्ज्ञेयत्व, ब्राह्मविवाह, देवविवाह, प्राजापत्यविवाह, प्राजापत्योढा में जातक का आर्षविवाह, सप्तदशपुरुषोत्तारकत्व, गान्धर्वविवाह, आसुरविवाह, पैशाचविवाह, राक्षसविवाह।

पञ्चम खण्ड- कुल परीक्षा, वरगुण विमर्श, लक्षणों का दुर्विज्ञेयत्व, कन्यागुण, मृत्तिका गोल परीक्षा, पिण्डग्रहण में शुभाशुभ फल।

षष्ठ खण्ड- ब्राह्मादि विवाह।

सप्तम खण्ड- विवाह में देशधर्मादि कर्तव्य, समानमितिकथन, पाणिग्रहण विधान- अभ्युदकुम्भप्रदक्षिणा, अश्मारोहणमन्त्र, लाजहोमप्रकार, केषाञ्चिन्मते लाजहोमात् परं परिणयन, गृहान्तरगमननियम, हविष प्रत्यभिधार, वरकर्तृहोममन्त्र, शिखाविमुञ्चन, दक्षिणाशिखाविमोचन, सप्तपदी गमन प्रकार।

अष्टम खण्ड

यानारोहण मन्त्र, नावारोहण, विवाह अग्नि, देशादि में जप मन्त्र, ईक्षकावलोकनमन्त्र, गृहप्रवेशमन्त्र, उपवेशनदविमाशनादि, ब्रह्मचर्यधारणादि, त्रिरात्रादिब्रह्मचर्यधारण, संवत्सर, व्रतोतर वधूवस्त्रदान, ब्राह्मणों के लिए अन्नदान, स्वस्त्ययनवाचन।

नवम खण्ड

पाणिग्रहण से गृह्याभिपरिचर्या, नष्टेऽग्नौ प्रायश्चित्त, एके नष्टेऽग्नौ पत्न्या उपोषण, अग्निहोत्रविधानेनाग्निपरिग्रहण, होमादिकाल, होमद्रव्य, तदभावे द्रव्यान्तरकथन, सायं प्रातः होम।

दशम खण्ड

पार्वण स्थालीपाक, भोजन नियम, देवता कथन, काम्य देवता, निर्वापप्रकार, प्रोक्षण कथन, अवघातप्रोक्षण, श्रवण, नानाश्रपणप्रकारकथन, एकत्र श्रपणपकार, हविरिध्माभिधारणादि, आघार राज्यभाग, आज्यभागादिकथन, आज्यभाग में यज्ञपुरुष के नेत्र, यज्ञपुरुषस्योपवेशनप्रकार, आहुति-नियम, हवनीयद्रव्यग्रहण का देशनियम, पञ्चावत्ति विशेष, स्विष्टकृद्धोमनियम, स्विष्टकृद्धोमे हविःशेष, स्विष्टकृद्धोममन्त्र, पूर्णपात्रनिनयन, एषोऽवभूथ कथन, पाकयज्ञतन्त्र, दक्षिणाप्रकार।

एकादश खण्ड-पशुकल्प, पशूपस्पर्शन, पशुप्रोक्षण, तूष्णीं पशुनिनयन, उल्मुकाहरण, शामित्र कथन, पशोरन्वारम्भण, अध्वर्युर्यजमान, वपाहोमः,स्थालीपाकश्रपण एवं स्थालीपाक, प्रत्यङ्ग द्विद्विरवदान, हृदयशूलविषयक कर्म तूष्णीम्।

द्वादश खण्ड

स्विष्टकृता प्राक् चैत्ययज्ञे बलिदान, देशान्तरस्थे चैत्ये दूत द्वारा बलिदान, भय के समय दूत के समीप शस्त्र देना, नदी तरणसाधन।

त्रयोदश खण्ड

गर्भलम्भन,पुंसवनस्वरूप प्रश्नादि, दक्षिणनासायां दूर्वा, हृदयस्पर्श।

चतुर्दश खण्ड

सीमन्तोन्नयन, पक्षनक्षत्रकथन, होममन्त्र, सीमन्तब्यूहन, वीणागाथक प्रेषण, गातव्यगाथानिर्देश, वृद्ध ब्राह्मणों की आज्ञा पालन, दक्षिणा ऋषभ।

पञ्चदश खण्ड

जातकर्म स्वरूप, मेधाजननमन्त्र, नामकरणम्, नामाक्षरादिकथन, चार अक्षरों के नाम कार्य, नामविषय कामना, द्व्यक्षर नाम पुंस, विषमाक्षर स्त्रियों के नाम, अभिवादन, मस्तकावहरणमन्त्र, तूष्णीं कुमार्या।

षोडश खण्ड

अन्नप्राशन मास, ब्रह्मवर्चस, तेजस्कामत्वे घृतौदन, प्राशनमन्त्र।

सप्तदश खण्ड

चौलकाल, पूर्णशरवस्थापन, कुमारावस्थादि कथन, उदकनिनयनमन्त्र, शिर उन्दनमन्त्र, कुशपिञ्जूलस्थापनमन्त्र, क्षुरस्थापन, केशच्छेदनमन्त्र, केशस्थापनप्रकार, क्षुरधारानिमार्जन, नापितादेश, यथाकुलधर्म केशसंवेश।

अष्टादश खण्ड

गोदान, उसका काल, केशशब्दस्थान पर श्मश्रुशब्द, श्मश्रुवपन, क्षुरशोधन में विशेष मन्त्र, नापितशासन, आचार्य के लिए वरदान प्रार्थना, दक्षिणा, गोमिथुन, संवत्सर व्रताचरणादेश।

एकोनविंशतिः खण्ड

उपनयनकाल गर्भाष्टमे वा वर्षे, क्षत्रिय का काल एकादश वर्ष, वैश्य का द्वादश, ब्राह्मण का षोडश वर्ष, क्षत्त्रिय-वैश्यों के लिए कालकथन, अध्यापनादिनिषेध, प्रावरण चर्मविचार, परिधेयवस्त्र, मेखला प्रकार एवं दण्ड, दण्डों के वृक्ष व परिमाण।

विंशतिः खण्ड-सभी के लिए स्वीकार्य, आचार्योपवेशन स्थान, ब्रह्मचारियों के स्थान, साङ्गुष्ठपाणिग्रहणप्रकार, तन्मन्त्र, आदित्यावेक्षण, जपमन्त्र, प्रदक्षिणावर्तन, हृदयदेशालम्भन, अमन्त्रक समिदाधान

एकविंशतिः खण्ड

समिदाहरण मन्त्र, मुखमार्जनप्रकार, तेजसा मार्जन, सावित्र्युपदेशविषय प्रार्थना, सावित्र्युपदेश, तद्वाचन,

द्वाविंशतिः खण्ड

ब्रह्मचर्योपदेश, ब्रह्मचर्यादेशमन्त्र, वेदब्रह्मचर्यकाल, ग्रहणपर्यन्त, भिक्षाकाल, समिधानकाल, प्रथम भिक्षाकथन,

भिक्षामन्त्र, पाकयज्ञविधान से चरुश्रवण गुरु के लिए निवेदन, होममन्त्र, सावित्र्या द्वितीय, महानाम्न्यादिहोम, वेदसमाप्तिवाचन, व्रतधारण, मेधाजनन, उदकुम्भाभिषेकवाचन, व्रतादेशव्याख्या शेष, अनुपेतस्यैष विधि, केशवपनमेधाजनन,

सावित्री।

त्रयोविंशतिः खण्ड

ऋत्विग्लक्षण, वरणक्रम, वरणविशेष नियम, सदस्यकथन, होतारं प्रथम, होतृवरणमन्त्र, ब्रह्मवरणमन्त्र, अध्वर्वादिवरणमन्त्र, होतृप्रतिज्ञा, ब्रह्मप्रतिज्ञा, इतर मन्त्र जप, याज्यलक्षण, आत्विज्यानिषेध, सोमप्रवाक कार्यविधि, नियमकथन, आज्याहुतिकथन, अनाहिताअग्निर्विशेष।

चतुर्विंशतिः खण्ड

ऋत्विक को मधुपर्कदान, स्नातकादि, मधुपर्कस्वरूप और प्रतिनिधि, आसनादि कथन, आसनग्रहण करने वाले के लिए कर्म, पादप्रक्षालननियम, तन्मन्त्र, मधुपर्केक्षणमन्त्र, अर्ध्यग्रहण, मधुपर्कग्रहणादि मन्त्र, त्रिरुत्क्षेपण, मधुपर्कप्राशन, सर्वभक्षणतृप्तिनिषेध, अवशिष्टत्यागसर्वभक्षण, द्वितीयाचमनमन्त्र, गोदानम्, उत्सर्गेच्छायामुत्सर्ग।

द्वितीय अध्याय के विषय- श्रावणी, आश्वयुजी, आग्रहायणी, अष्टका, गृहनिर्माण और गृहप्रवेश का वर्णन है।

प्रथम खण्ड

श्रवणाकर्मकाल, सक्त्वादिस्थापन, धानानामञ्जन, अस्तमिते होम, पुरोडाशावस्थानकथन, पुरोडाशोपर्याज्यहोम, धानाञ्जलिहोम, अमात्य के लिए दान, सर्पबलिहरण, प्रदक्षिणोपवेशनपरिदान मन्त्र, अमात्यादिपरिदान, आत्मपरिदान, अन्तरागमननिषेध, सायंप्रातर्बलिहरण, प्रकारान्तरेण बलिहरण,

द्वितीय खण्ड

आश्वयुजीकर्मकाल, स्थालीपाकहोम, पृषातकहोम, आग्रयणस्थालीपाक, अनाहिताग्नेर्विशेष।

तृतीय खण्ड

प्रत्यवरोहणकाल, पौर्णमास्या, पायसहोममन्त्र, स्विष्टकृद्भाव, जपमन्त्र, अमात्य संनिवेश, मन्त्रजप, दक्षिणा, स्वस्त्यनादिवाचन।

चतुर्थ खण्ड

अष्टकाकर्मकाल, प्राग्दिन में पितृ दान, ओदनादि श्रवण, मन्त्राष्टक होम, पशुना स्थाली पाक, अनुग्रह में यवदान, मनसा ध्यानम्, नानष्टक, देवताविकल्पा, वपाहवन मन्त्र, अष्टमी सौविष्टकृत्याहुति, स्वस्त्यनवाचन।

पञ्चम खण्ड

अन्वेष्टक्यकाल, मासंकल्पादि, पिण्डपितृयज्ञकल्पत्व, पितृभ्य पिण्डदान, मातृ पिण्डदान, मित्रादिपिण्डस्थान, माध्यावर्ष व्याख्यान, नवावरान्भोजन, अशकावयुज, नान्दी श्राद्ध।

षष्ठ खण्ड

रथारोहणात्पूर्व तत्स्पर्शन मन्त्र, अक्षस्पर्शनमन्त्र, रश्मिस्पर्शनमन्त्रः, रथगमन मन्त्र, रथाङ्गनामिमर्शन, शकटाद्यारोहण मन्त्र, नावारोहणमन्त्र, कुटुम्बोपयोगिद्रव्याहरण, नवरथारोहणमन्त्रः, गृहसमीपागमन, रथावरोहणमन्त्र, पुनर्जपमन्त्र ।

सप्तम खण्ड

वास्तुपरीक्षा, भूलक्षण, अपरलक्षण, भुवोऽपलक्षण,विरुद्धवृक्षोत्पाटन, भूमेरुच्चावचत्वनिर्णय, महानतस्थानकथन, फलकथन, सभागृहस्थानकथन, तत्फलकथन, परस्थाननिर्णय।

अष्टम खण्ड

वास्तुपरीक्षण क्रमवर्णन, खातकरण और तत्पूरण, तत्फलकथन, पुनर्जलैस्तत्पूरण, ब्राह्मणवास्तुकथन, क्षत्त्रियवास्तुकथन, वैश्यवास्तुकथन, वास्तुमापन, समचतुष्कोण एवं दीर्घ, वास्तुप्रोक्षण, प्रोक्षणमन्त्र, अवान्तरगृहभेद, मध्यमगर्ताविशेष, अनुमन्त्रण और मन्त्र।

नवम खण्ड-

वंशाधान व उसके मन्त्र, मणिकप्रविष्ठापन और मन्त्र, मणिकेऽन्निषेचन, अविच्छिन्नजलधारादान, स्थालीपाकश्रपणादि, वास्तुशान्ति।

दशम खण्ड

गृहप्रपदन, बीजवद्गृह, होमकरण, अनुमन्त्रण सूक्त।

तृतीय अध्याय के विषय- वेदाध्ययन के नियम एवं श्रावणी का वर्णन है।

प्रथम खण्ड

पञ्चयज्ञ प्रतिज्ञा व नाम, उसका स्वरूपकथन, नित्यकर्तव्यत्व।

द्वितीय खण्ड

स्वाध्यायविधि और उसके नियम, ॐकारव्याहृतिपूर्वक गायत्री पठनादि।

तृतीय खण्ड

स्वाध्यायक्रम, प्रशंसा, स्वाध्याय से पितृ तृप्ति, समाहितमनसाऽध्येतव्य।

चतुर्थ खण्ड

तर्पणीय देव, पितृतर्पण दक्षिणा, ब्रह्मयज्ञावश्यकत्वकथन, ब्रह्मयज्ञज्ञान अध्याय।

पंचम खण्ड

अध्यायोपाकरण और उसका काल, आज्यभागाहुति दधिसक्तु होम, होममन्त्र, देवताहोमादि, ब्रह्मचारियों के लिए भी अध्ययन, व्याहृतिसावित्रीजप वेदारम्भ, उत्सार्गाध्ययनकाल, ब्रह्मचारिधर्म उपाकरण, सावित्र्याचार्यादि तर्पण, उत्सर्जन।

षष्ठ खण्ड

काम्यकर्मस्थान में काम्य पाकयज्ञ, पुरोडाशस्थान में चरु, नैमित्तिकहोमस्तन्मन्त्र, अशुभस्वप्नदर्शन उपस्थान मन्त्र, अगम्यागमनादावाज्य होम, समिदाधान, मन्त्रजप।

सप्त खण्ड

सूर्योपस्थानमन्त्र, संध्योपासना, प्रातःसंध्या गायत्रीजपकाल, जपनियम, कपोतपाते होमजप, अर्थ के लिए होमजप, नष्टमिच्छतो होम जप, महान्तमन्वानमिच्छतो होमजप।

अष्ट खण्ड

समावर्तने वस्तूपकल्पना, समिदाहरण नियम, कामनाविशेष में समिन्निर्णय, समिदाधानादिगोदान, होम में जलावगाहन, कुण्डलबन्धन, स्नानाञ्जननियम, मन्त्रानात्मवाचक, अनुलेपननियम, छत्रादान, वैष्णवदण्डदान।

नवम खण्ड

उपदेशमन्त्रादिकथन, मृत्यु हेतु समिदाधान, मधुपर्कपूजनम्। स्नानकालः, व्रतनियमों में निषेध नियम।

दशम खण्ड

गुरु नाम कथन, उपवेशनानुज्ञा उच्चैर्नामकथन, उपांशुकथन मन्त्रः शिष्य उपांशु कथन, आचार्यजपमन्त्र, जपोत्तरमनुमन्त्र तत्प्रशंसा, पक्ष्याद्याप्रियशब्दश्रवण।

एकादश खण्ड

सर्वदिक् भयप्राप्ति में जपहोम, जप मन्त्र एवं सूक्त।

द्वादश खण्ड

स्वीयजप मन्त्र, इषुधिदान मन्त्र, रथगमन में जपमन्त्र सौपर्णमन्त्र, राज्ञोऽनुक्रमेण गमन, युद्धप्रदेशनियम, दुंदुभिवादन में विसर्जन मन्त्र, राजा, पुरोहित जपमन्त्र।

चतुर्थ अध्याय के विषय- अन्त्येष्टि और श्राद्ध का विवेचन है। इस पर जयन्तस्वामी, देवस्वामी, नारायण एवं हरदत्त की व्याख्या वृत्ति और भाष्य भी हैं।

प्रथम खण्ड

व्याधिपीडित कर्तव्य, ग्रामकामत्वे प्रमाण, अगदः सोमादि अग्नि, मृतस्याऽऽहिताग्नेश्चिताभूमि खनन, राजा कवचधनुर्दान एवं जपमन्त्र, खातस्य निम्नोच्चत्व कथन, खातस्याऽऽयाम प्रमाण एवं उसका विस्तृत प्रमाण, तस्याधोनियम, श्मशानदेशनिरूपण, कण्टार्कवृक्षायुद्वासन, विशेषविधि, प्रेतस्य केशादिवपन, बर्हिराज्यादिसंस्थान, पृषदाज्यप्रकार।

द्वितीय खण्ड

अग्नियज्ञपात्राद्यानयन, प्रेतानयनप्रकार, शकटादि, अनुस्तरणीकथन, गौरजा वैकवर्णा, पशोः सव्यबाहुबन्धनपूर्वकमानयन, तदन्वमात्यानामागमन, कर्तु कर्तव्यनियम, आहवनीयाधान, गार्हपत्याधान, दक्षिणाग्न्याधान, चिताग्निचयन, प्रेतसंवेशन, क्षत्त्रियप्रेतस्य धनु संवेशन, पत्न्युत्थापन, कर्तुर्जपमन्त्र।

तृतीय खण्ड

पात्रयोजन, जुह्वानयन, स्थानविशेष पर द्रव्यविशेषाधान, अरण्यादियों का पूर्वादि दिशाओं में स्थापन, आसेचनवत्सु पृषदाज्य पूरण, पुत्र से संग्रह कार्य, शिरोमुखाच्छादनमन्त्र, प्राण्योर्वक्कौ, आयुधायोजन, वृक्काभावे पिण्डोधान, प्रणीताप्रण्यनानुमन्त्र, दक्षिणाग्नावाज्यहोम, प्रेतस्योरसि पञ्चमाहुति मन्त्र।

चतुर्थ खण्ड

युगपदग्निज्वालनादेश, अनुष्ठित कर्म का फल, दक्षिणाग्निस्पर्श फल, युगपत्प्राप्ति में फल, दहनमन्त्र और प्रशंसा, स्नानजलाञ्जलिदानादि, सूर्यबिम्व को देखकर गृह प्रवेश, कनिष्ठ प्रथमा इत्यादि नियम, दानाध्ययन आदि।

पंचम खण्ड

अस्थिसंचयनकाल, स्त्रीपुरुषभेद से कुम्भकथन, प्रोक्षणमन्त्र, संचयनोत्तरमवधान, संचयनप्रकार, पांसुपक्षेपमन्त्रजपगर्तपूरणादि।

षष्ठ खण्ड

शान्तिकर्माग्निहरण, चतुष्पथेऽग्नि अग्म्यवेक्षणादिकुश,अग्नेरुत्पादनदीपन, दक्षिणद्वारपक्षात्संततामुदकधारा, अनुडुच्चर्मण्यमात्यारोहण, परिधिपरिधान, होमसमापनादि, पुत्राद्यवलोकन, अश्माभिमर्शन, परिक्रमणजप, स्विकृदादिसमापन, अथोपवेशन, अस्वपन्त आसव, होमसमापनादि।

सप्तम खण्ड

श्राद्धप्रकार, ब्राह्मणनियमादि, ब्राह्मणसंख्या, पिण्डनिपरणादि, ब्राह्मण हेतु जलदान, आसन पुनर्जलदान, पात्र में तिलावपन, पितृकर्मदक्षिणमर्घ्यदान, अर्घ्यदानात्पूर्व जलदान एवं अर्घ्यनिवेदन, अर्घ्यानुमन्त्र।

अष्टम खण्ड

गन्धादिदानमग्नौकरणानुज्ञा, प्रत्यनुज्ञा, अग्नि होम, अभिमुख देव पाणिमुख पितर, भोजनपात्र में अन्नदानविधान, हुतशेषान्नदान, भोजनपात्र में अधिकान्नदान, मधुमतीश्रावण, पिण्डार्थमन्न निवेदन, ब्राह्मणानुज्ञान।

नवम खण्ड

शूलगव, पशोर्निरूपण औऱ लक्षण, पशूत्सर्ग पालनाविधि, देशनियम, द्रव्य ग्राम, अमात्यप्रतिषेध, सेना, शूलगव फलश्रवण, कालकथन, यूपनिखनन, पशुबन्धन, पशुमुत्सृज, जपाहोम, यजमान रुद्र, हुतशेषभक्षण, शन्तातीय जप, गृहप्रवेश द्वादश नामक होममन्त्र, मोक्षणादि पशुकल्पतमान, शूलगवावश्यकता, मन्त्रान्तर, एकनामक, बलिहरण, प्रतिधूर्म गवानयन, शन्तातीय जप, दिगुपस्थान, सर्वरुद्र, पशुपतापगोष्ठयजन, निःशेषस्थालीपाकहोम, आचार्यनमन, सपिण्डीकरण शान्ति।

शांखायन गृह्यसूत्र-

प्रथम अध्याय के विषय- गर्भाधानादि सस्कारों और पार्वण का वर्णन है।

द्वितीय अध्याय के विषय- उपनयन एवं ब्रह्मचर्य आश्रम का विवरण है।

तृतीय **अध्याय के विषय**- स्नान, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, वृषोत्सर्ग, आग्रहायणी और अष्टका का वर्णन है।

चतुर्थ **अध्याय के विषय**- श्राद्ध, श्रवणी, आश्वयुजी आदि का उल्लेख है। पञ्चम और षष्ठ में प्रायश्चित्तों का विवरण है। **शांशायन गृह्यसूत्र**- रचनाकार युयज्ञ है, इसमें छः अध्याय है- संस्कार- गृहनिर्माणादि का वर्णन है तथा यह गृह्यसूत्र आदि का वर्णन है, इसके प्रमुख भाष्य-ग्रन्थों में सुमंत सूत्रभाष्य जैमिनीय-सूत्रभाष्य 'वैशम्पायन-सूत्रभाष्य' और पैल-सूत्रभाष्य उल्लेखनीय है। शांखायन गृह्यसूत्र के एक अन्य भाष्यकार रामचन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त शांखायन' पर लिखी गई टीकाओं में दयाशंकर द्वारा गृह्यसूत्र प्रयोगदीप, रघुनाथ कृत 'अर्थदर्पण', रामचन्द्रकृत गृह्यसूत्रपद्धति', वासुदेवकृत 'गृह्यसंग्रह' और नारायणकृत नारायणी प्रमुख हैं तथा इसमें चार अध्याय हैं।

कौषीतकि गृह्यसूत्र- इसके रचयिता शाम्भव्य है और पाँच अध्याय हैं। विवाह, प्राम्भिक संस्कार, उपनयन संस्कार, पितृमेध और कृषिक्रर्मों का उल्लेख है।

अप्रकाशित गृह्यसूत्र- शौनक, भारवीय, पाराशर, शाकल्य, पैङ्गिररस गृह्यसूत्र आदि।

शांखायन गृह्यसूत्र के प्रमुख भाप्य-ग्रन्थों में सुमंतसूत्रभाष्य जैमिनीय-सूत्रभाष्य 'वैशम्पायन-सूत्रभाष्य' और पैल-सूत्रभाष्य उल्लेखनीय है। शांखायन गृह्यसूत्र के एक अन्य भाष्यकार रामचंद्र हैं। इनके अतिरिक्त शांखायन' पर लिखी गयी टीकाओं में दयाशंकरकृत गृह्यसूत्रप्रयोगदीप, रघुनाथकृत 'अर्थदर्पण', रामचन्द्रकृत गृह्यसूत्रपद्धति', वासुदेवकृत 'गृह्यसंग्रह' और नारायणकृत नारायणी प्रमुख हैं।

इकाई 4. यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र परिचय

यजुर्वेद शब्द के अर्थ का सम्यम् बोध यास्क रचित निरुक्त से होता है। 'यष्' शब्द 'यज्' धातु से बना हे 'यजुर्यजते:' (निरुक्त 7.12)। तदनुसार इस वेद संहिता का यज्ञ में अत्यन्त निकट का सम्बन्ध है। इसे 'अध्वर्युवेद' के भी नाम से जाना जाता है क्योंकि इस वेद के मन्त्रों के द्वारा अध्वर्यु यज्ञ के शरीर का सम्मादन करता है। यजनादि क्रिया को गति प्रदान करना ही यजु है **इज्यते अनेन इति यजुः**। वर्तमान में यजुर्वेद के दो प्रमुख भेद हैं. शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद।

यजुर्वेद का सामान्य परिचय

वेद	उपलब्ध शाखा	ब्राह्मण	उपनिषद्	शिक्षा-प्रातिशाख्य	विशिष्ट विवरण

शुक्ल यजुर्वेद	काण्व, माध्यन्दिनीय	काण्व, शतपथ ब्राह्मण	ईशावास्योपनिषद् (संहिता के 40वां अध्याय) बृहदारण्यकोपनिषद्	याज्ञवल्क्य शिक्षा, वाजसनेयि प्रातिशाख्य	विषय- याग ऋत्विक- अध्वर्यु माध्यन्दिन – अध्याय 40, अनुवाक – 303 मन्त्र – 1975 काण्व - अध्याय – 40 अनुवाक – 328 मन्त्र - 2086 आचार्य- वैशम्पायन देवता- वायु उपवेद- धनुर्वेद
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ कपिष्ठल	तैत्तिरीय ब्राह्मण	तैत्तिरीय मैत्रायणी श्वेताश्वतरोपनिषद् कठोपनिषद्	माण्डव्य, भारद्वाज, वासिष्ठी, व्यास, अवसाननिर्णय, तैत्तिरीय प्रातिशाख्य	काण्ड – 7 प्रपाठक/प्रश्न – 44 अनुवाक – 651 पञ्चाशत् - 2198

यजुर्वेद के दोनों ही शाखाओं में गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं। **शुक्ल यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र**- पारस्कर गृह्यसूत्र, **कृष्ण यजुर्वेदी गृह्यसूत्र**- बौधायन गृह्यसूत्र, भारद्वाज गृह्यसूत्र, आपस्तम्ब गृह्यसूत्र, हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र, वैखानस गृह्यसूत्र, वाधूल गृह्यसूत्र, मानव गृह्यसूत्र, काठक गृह्यसूत्र तथा वाराह गृह्यसूत्र हैं। बौधायन ऋषि द्वारा प्रणीत बौधायनगृह्यसूत्र तीन अध्यायों में विभक्त है। इस पर गोविन्द स्वामी की टीका मिलती है। मूल रूप से यह बौधायन के ही कल्पसूत्र का अन्यतम भाग के रूप में उपलब्ध है।

उपलब्ध गृह्यसूत्र-

वेद	गृह्यसूत्र
शुक्लयजुर्वेद	पारस्कर
कृष्णयजुर्वेद	आपस्तम्ब, बौधायन सत्याषाढ, वैखानस भारद्वाज, वाधूल, काठक ,वाराह , हिरण्यकेशी, मानव, अग्निवेश्य

भारद्वाज गृह्यसूत्र- इसमें तीन प्रश्न है। तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। इसमें तीन अध्याय है। 'भारद्वाज' गृह्यसूत्र पर कपर्दिस्वामी तथा रंगभट्ट के भाष्य उपलब्ध हैं तथा विवाह के विषय में वर्णन है।

वैखानस गृह्यसूत्र- तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। यह परवर्तीयुग की रचना है क्योंकि उसमें ऐसे विषयों का समावेश है जो परिशिष्ट के अन्तर्गत और मंत्र केवल प्रतीकात्मक है।

अग्निवेश्य गृह्यसूत्र-अग्निवेश द्वारा विरचित वाधूल गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। यह अग्निवेश्य गृह्यसूत्र नाम से भी प्रसिद्ध है। इसमें वर्णित विषय अन्य गृह्यसूत्रों से भिन्न हैं।

मानव गृह्यसूत्र- लौगाक्षि के द्वारा रचित मानव गृह्यसूत्र है, इसको 'लौगाक्षि गृह्यसूत्र भी कहते हैं। मानव गृह्यसूत्र मैत्रायणी संहिता से सम्बद्ध है। यह दो प्रकरण से युक्त है। इस पर अष्टावक्र का भाष्य उपलब्ध है।

काठकगृह्यसूत्र- इसको लौगाक्षिगृह्यसूत्र तथा पञ्चाध्यायी भी कहा जाता है।

वाराह गृह्यसूत्र- यह मैत्रायणी शाखा के मंत्रो से सम्बन्धित है। यह परवर्तीकाल की रचना है। इसके अंश मानवगृह्यसूत्र तथा काठक गृह्यसूत्र के समान ही है।

आपस्तम्ब ऋषि द्वारा प्रणीत आपस्तम्ब धर्मसूत्र मूलतरू कल्पसूत्र का ही भाग है। यह आपस्तम्ब कल्पसूत्र के 26वें और 27 वें प्रश्न के रूप में वर्णित है। 'आपस्तंब गृह्यसूत्र पर कर्काचार्य, सुदर्शनाचार्य, नृसिंह, हरिदत्त, कृष्णभट्ट सहदेव और धूर्तस्वामी के भाष्य उपलब्ध हैं। हिरण्यकेशी गह्यसूत्र भी प्रायः अन्य यजुर्वेदीय गृह्यसूत्रों के समान मूल रूप से कल्पसूत्र का ही भाग है। यह हिरण्यकेशी कल्पसूत्र 19 वें 20वें अध्याय के रूप में वर्णित है। इसका दूसरा नाम सत्याषाढ गृह्यसूत्र है। इस पर मातृदत्त का भाष्य उपलब्ध है।

शुक्ल यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र- पारस्कर गृह्यसूत्र शुक्ल यजुर्वेदीय है। यह वाजसनेय गृह्यसूत्र नाम से भी ख्यात है जो तीन काण्डों में विभक्त है।

पारस्कर गृह्यसूत्र - अग्निस्थापन, ब्रह्मासन,प्रणयन, परिस्तरण, पदार्थासादन, पवित्रकरण, प्रोक्षणीसंस्कार, आसादितप्रोक्षण, आज्यनिर्वाप, अधिश्रयण, आज्यचर्वादि पर्यग्निकरण, उद्वासित स्थापनक्रम, आज्योत्पवनादि संस्कारनिरूपण, प्रोक्षणी, पूर्ववदितिसूत्र, उपयमन कुशादान, समिदाधान, पर्युक्षणादि, उक्तहोम विधि सार्वत्रिकत्वकथन, पवित्रकरण, प्रोक्षणीसंस्कार, पात्रादिप्रोक्षण, आज्यादि, पर्यग्निकरण, स्रुवसंस्कार, आज्या युद्वासनन्त संस्कार, पुनः प्रोक्षणी संस्कार प्रयोजन, समिदाधान प्रकार, समिल्लक्षण, समिदादिप्रमाण।

प्रथम काण्ड- ग्रन्थोपक्रम, स्थालीपाक कण्डिका, कुशकण्डिका, आवसथ्याधानविधि, अर्घ्यदानपात्र, पुनराधान, अर्घ्यविधि (मधुपर्क), विवाहविधि, पाकयज्ञ, विवाह नक्षत्रविचार, वर्णानुक्रम से विवाह, वस्त्रपरिधान ,कन्यादान विधान, परस्परसमीक्षण, आधारणविधि, जयाहोमविधि, अभ्यातानहोमविधि, लाजाहोमविधि साङ्गुष्ठपाणिग्रहण, शिलारोहण, गाथागान, प्रदक्षिणाविधान, सप्तपदीक्रम, अभिषेचन, सूर्यदर्शन, हृदयालम्भन, अभिमन्त्रण, अनुगुप्तागार (कोहवर) गमन, दक्षिणा, ग्रामवचन (ग्रामवृद्ध-वचनानुसार एवं लोकाचार) ध्रुवदर्शन, सिन्दूरदान, ब्रह्मचर्यविधान, नित्यहोमविधि, नैमित्तिकहोमविधि, वध्वाभर्तृगृह में प्रथम गमन कर्म (प्रायश्चित्) चतुर्थीकर्म (गर्भाधान), पक्षादिकर्म (दर्शपूर्णमासस्थालीपाक), गर्भधारणायनस्तविधि, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, सीमन्तीक (सुखप्रसवार्थ कर्म), जातकर्म, नामकरण, बहिर्निष्क्रमण, सूर्यावलोकन, पुत्रादिदर्शन विधि, अन्नप्राशन।

द्वितीयकाण्ड

चूडाकरणकेशान्त, उपनयन, समिधादान, भिक्षाचरण, दण्डाजिनधारण, ब्रह्मचारिव्रत, स्नातकभेद, समावर्तन, उपनयन की परमावधि, पतितसावित्रीका, स्नानविधि (समावर्तन), स्नातकव्रत, स्नानदिनात्प्रभृतित्रिरात्रव्रत, पञ्चमहायज्ञविधि, उपाकर्मविधि, उत्सर्गविधि, इन्द्रयज्ञ, पृषातक (आश्वयुजी) कर्म, सीतायज्ञ।

तृतीय काण्ड

नवयज्ञ, मेघाभिमन्त्र, वाश्यमान, नवयज्ञ, श्रृंगालाभिमन्त्रण अथवा नवान्नप्राशन, आग्रहायणीकर्म, स्रस्तरारोहण, अष्टका, अन्वष्टका, शालाकर्म (वास्तुशान्ति), वापीकूप, मणिकावधान, शिरोरोगप्रतीकार, उतूलपरिमेह अर्थात् दासवशीकरण, शूलगव, गोयज्ञ, वृषोत्सर्ग, पायसप्राशन, तर्पण, अन्त्येष्टिकर्म (उदककर्म अथवा दाहविधि), सभाप्रवेशविधि, वशीकरण, रथारोहण , हस्त्यारोहण, अश्वारोहण, उष्ट्रारोहण, खरारोहण, मार्गारोहण, चतुष्पथगमन, नद्यभिमन्त्रण, नौकारोहण, वनाभिमन्त्रण, पर्वताभिमन्त्रण, श्मशानाभिमन्त्रण, गोष्ठाभिमन्त्रण, नैमित्तिकदोषनिवारण, वाश्यमानश्श्रृगाल्यंभिमन्त्रण, शकुन्यभिमन्त्रण, वृक्षाभिमन्त्रण, प्रतिग्रहविधान, अधीतस्याविस्मरणोपाय, काम्यश्राद्ध, भोजनसूत्र, योगीश्वरद्वादशनाम।

विषय वस्तु- प्रथम काण्ड में आवसथ्य अग्न्याधान, विवाह तथा गर्भाधान से अन्नप्राशन पर्यन्त संस्कार वर्णित हैं। प्रथम अध्याय का आरम्भ ही आवसथ्याधान को प्रथम कारिका में उल्लेख करते हैं-

'आवसथ्याधानं दारकाले' इति ।

जैसा कि नारायण ने कहा हैं - **विवाहकाले चतुर्थीकर्मानन्तरं आवसथ्यस्य गृह्यस्य अग्नेराधानमावसथ्याधानं तद्दारकाले विवाहकाले चतुर्थीकर्मानन्तरं कुर्यात् ।**

अर्थात् गृह्य अग्नि जो कि 'आवसथ्य' कहलाती है उसका आधान विवाह के समय चतुर्थी कर्म के पश्चात् करना चाहिए। पारस्कर के गृह्यसूत्र पर कर्काचार्य, जयराम, हरिहर आदि की व्याख्याएँ हैं। शुक्ल यजुर्वेद में कातीय गृह्यसूत्र का भी उल्लेख हैं। 'कातीय गृह्यसूत्र के रचनाकार पारस्कराचार्य, वृत्तिकार वासुदेव और टीकाकार जयराम हैं। इसी गृह्यसूत्र पर एक पाण्डित्यपूर्ण टीका शंकर गणपति रामकृष्ण की है।

इस ग्रन्थ पर कर्क, गदाधर, जयराम, मुरारि मिश्र, रेणुकाचार्य, वागीश्वरदत्त और वेदमिश्र के भाष्य प्रसिद्ध हैं।

इकाई 5.सामवेदीय गृह्यसूत्र परिचय

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने श्रीमुख से अपनी विभूतियों के अन्तर्गत इस सामवेद की गणना की है -

वेदानां सामवेदोऽस्मि।)10.22)

वेदों में मैं सामवेद हूँ। वेदों में ऋग्वेद पद्यात्मक, यजुर्वेद पद्यगद्यात्मक तथा सामवेद गायन प्रधान है। - यह गान अधिक आह्लादक प्रभावकारी होता है। इसीलिए गायन होने के कारण यह सामवेद शब्दब्रह्म सामवेदश्च वेदानां - की गायन रूपी विभूति है। इस वेद की महिमा का अन्यत्र भी गान किया गया है महाभारत) यजुषां शतरुद्रियम्(14.3.7) वेदों में सामवेद तथा यजुषों में शतरुद्रीय का विशेष महत्त्व है। छान्दोग्योपनिषद् ने सामवेद को वेदरूपी वृक्ष का पुष्प कहा है-

सामवेद एव पुष्पम्)3.3.1)

सामवेद का सामान्य परिचय

वेद	उपलब्ध शाखा	ब्राह्मण	उपनिषद्	शिक्षा-प्रातिशाख्य	विशिष्ट विवरण
सामवेद	कौथुम राणायनीय जैमिनीय	पञ्चविंश(ताण्ड्य) षड्विंश,सामविधान आर्षेय,मन्त्र (छान्दोग्य) देवताध्याय,वंश संहितोपनिषद् जैमिनीय ब्राह्मण जैमिनीयोपनिषद्-तलवकार ब्राह्मण	छान्दोग्य केनोपनिषद्	नारदीया, गौतमी, लोमशी, पुष्पसूत्र, ऋक्तन्त्र, सामतन्त्र, अक्षरतन्त्र	विषय-गानऋचाओं) का (गान/उपासना ऋत्विक-उद्गाता मन्त्र- 1875 (ऋक्) आचार्य-जैमिनी देवता- सूर्य उपवेद-गन्धर्ववेद

सामवेदीय गृह्य सूत्र- गोभिल गृह्यसूत्र, खादिर गृह्यसूत्र और जैमिनीय, कौथुम गृह्य सूत्र ये सामवेदीय गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं।

उपलब्ध गृह्यसूत्र-

वेद	गृह्यसूत्र
सामवेद	गोभिल, खादिर, गौतम, जैमिनीय , कौथुम

गोभिल गृह्यसूत्र- सामवेद की कौथुमशाखा से सम्बन्धित है और चार प्रपाठकों में विभाजित है। इस पर कात्यायन ने 'कर्मप्रदीप' नाम से एक परिशिष्ट लिखा है। कात्यायन की एक टीका 'आदित्य' है जो कि

शिवराम से मिलती है। गोभिल गृह्यसूत्र के प्रमुख टीकाकार भद्रनारायण, सायण, और शिवि हैं तथा गोभिल गृह्यसूत्र में चार प्रपाठक हैं।

खादिरगृह्यसूत्र- राणायनीय शाखा से सम्बद्ध है। इस पर स्कन्दस्वामी की पाण्डित्यपूर्ण वृत्ति है। वामन ने इस पर कारिकाएँ लिखी हैं। यह गोभिल गृह्य सूत्र का ही संक्षिप्तीकरण है।

'पितृमेध गृह्यसूत्र को गौतम कृत बताया जाता है। इस ग्रन्थ के टीकाकार अनंतज्ञान का कहना है कि ये गौतम न्यायसूत्रों के प्रणेता अक्षपाद महर्षि गौतम ही थे। इसमें दो खण्ड है। प्रथमखण्ड में चौबीस कण्डिकाएँ है और द्वितीय खण्ड में नौ कण्डिकाएँ हैं। इस पर सुबोधिनी टीका मिलती है।

गोभिल गृह्यसूत्र-

प्रथम प्रपाठक के विषय-

प्रथम कण्डिका

ग्रन्थ प्रतिज्ञा, कर्तुः कर्माहत्व, कर्म हेतु साधारण काल, अग्न्याधानावसर, कर्मान्त में ब्राह्मणभोजन, करणोपदेश. अपर आधानकाल, अग्निपर्युक्षण, आधानदिन में पृथक् प्रातराहुति, अरणिमथन, तन्त्र विशेष, प्रशंसा, आधान में नियमितोऽग्नि, गृह्याग्नि स्वरूप, आधान नियमितो अग्नि, सायं होमकाल, प्रातः होम।

द्वितीय कण्डिका

यज्ञोपवीत, यज्ञोपवीतस्वरूप, प्राचीनावीतिस्वरूप, पितृयज्ञ में प्राचीनावीतित्व, आचमनविधि, अवस्थाविशेषे आचमननिषेध,आचमनविधिभङ्गदोष, आचमनजलपाननियम प्रत्याचमननिमित्त।

तृतीय कण्डिका

होम में उदकाञ्जलिषेचन, सायंप्रातर्होम मन्त्र, आहुतेरनन्तरकृत्य, आजीवन सायं प्रातर्होमस्य कर्तव्यता, होमप्रतिनिधिविचार, नित्यहोम जलाहरण, पाकनिष्पन्न भूतप्रवाचनादिकर्तव्योपदेश।

चतुर्थ कण्डिका

वैश्वदेवबलिहरण, अतिथिसम्भाषण, देवयज्ञहोम, देवयज्ञ बलि हरण, बह्मयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ,

बलिदान में उपपेशनादिनियम, गृहमेधिव्रत, बहिहरण, , यज्ञ में बलि हरण सर्वान्नतो भाव, रौद्रबलि, सर्वान्नतो बलिहरण।

पञ्चमकण्डिका

दर्शपौर्णमासाधिकार, उपवासकालनिरूपण (पौर्णमा), उपवासकालनिरूपण (अमावास्याया)।

पक्षान्तोपवास पक्ष, पौर्णमासेनकृष्णपक्षयाग, अमावास्या में विशेष, अमावास्योपयासविचार, अमावास्याश्राद्धकालोपवास काल, बर्हिलक्षण, पितृकृत्यविशेष, कुशप्रतिनिधि, उपवासादि नियम।

षष्ठ कण्डिका

औपवसथिका भोजन दोष, औपवसथिक भोजन दोष, उपवास में रात्रि विचार, ब्रह्मोपवेशन, ब्राह्मण कृत्य, ब्राह्मणो अनुकल्प, द्रव्यसाधन।

सप्तम कण्डिका

पाकयज्ञेतिकर्तव्यता, चरुपाक, प्रणीताप्रणयन, परिधिकरण, आज्यसंस्कार, पवित्रकरण,

पवित्रसंस्कार, आज्यसंस्कार।

अष्ठम कण्डिका

आज्यस्थालीपाकस्थापन, उपस्तीर्णभिवारितहोम, आज्यभागहोम, देवतानामादेशादि, व्रतप्रतिनिधि, महाव्याहृतिहोम, प्रायश्चित्तहोमविचार, प्रधानहोमानन्तर स्विष्टकृद्धोम, स्विष्टकृद्धोम प्रकार, मेक्षणप्रतिपत्ति, अनाहिताहिताग्नि स्थालीपाकदेवता, यज्ञवास्तुकरण।

नवम कण्डिका

चरुशेषप्रतिपत्ति, ब्रह्मणस्तृप्ति, ब्राह्मण भोजन, पूर्णपात्र दान व लक्षण, पाक यज्ञ में ऋत्विक, पाकयज्ञदक्षिणा, नित्यहोम लाभ, कर्तव्य उपदेश, हव्यप्रतिनिधि, अहुतस्य प्रायश्चित, कर्मप्रदीपोक्त प्रायश्चित, हविरादि में साधारण नियम, आज्याहुति विशेष, कर्म समाप्ति पर वामदेव्यगान।

द्वितीय प्रपाठक के विषय-

प्रथम कण्डिका

पुष्यनक्षत्रविवाह कर्तव्यता, कटपादप्रवर्तन, कन्याया लक्षणपरीक्षा, कटोपवेशन, पिण्ड द्वारा कन्यापरीक्षा ज्ञातिकर्म, कन्यास्नान, वासपरिधापन, पाणिग्रहणप्रकरण, कर्तव्यताविशेष द्रव्याद्या।

द्वितीय कण्डिका

लाजहोम, अश्माक्रमण, कन्यापरिणय, सप्तपदी, ईक्षकप्रतिमन्त्र, वर-वधु मूर्धा अभिषेक, कन्यापाणिग्रहण।

तृतीय कण्डिका

षडाज्याहुति होम, वध्वा वाग्यमनभङ्ग, ध्रुवदर्शन, अरुन्धतीदर्शन, वध्वाभिवादन, दाम्पत्य, जीवन, वरपूजा काल, हविष्यान्नभोजन, समशनीय स्थालीपाक।

चतुर्थ कण्डिका

वध्वायानारोहण, चतुष्पथामन्त्र, अक्षमभंगादि होम कर्म, वामदेव गान, नव वधु गृहागमन,, बालकस्थापन, बालक के हाथ में शकलोटादि दान, ध्रुवाज्युति, समिदाधान एवं गुरु अभिवादन, ध्रुवाज्याहुति।

पञ्चम कण्डिका

चतुर्थी होम, प्रायश्चिताज्याहुति होम, उदपात्र सम्पात प्रक्षेप, वधु उद्वर्तन, ऋतुगमनविचार, गर्भाधान।

षष्ट कण्डिका

पुंसवनकाल निरूपण व कर्तव्य, अपरपुंसवन।

सप्तम कण्डिका

सीमन्तकरणकाल निर्णय व कर्तव्यता, सोष्यन्तीहोम, जातकर्म, व्रीहियवप्रेषण, कुमारमेधाजनन, सर्पिः प्राशन, छन्दोगानप्राशनविचार, अन्नप्राशनविधि, जातकर्म।

अष्टम कण्डिका

चन्द्रोपस्थापन, निष्क्रमण, चन्द्रायाघ्यंदान, नामकरण, कन्या नाम विशेष, कुमारजन्मतिथियजन।

नवम कण्डिका

चूडाकरण, द्रव्यसाधन, कर्मक्रम, कन्या विशेष, मुण्डन, चूडाकर्म समाप्ति।

दशमकण्डिका

उपनयन प्रकरण, काल, व्रात्यकरण, उपनयन में प्रातः भोजन, माणवक यज्ञोपवीत धारण, अलाभे उपदेश, उपनयन में अग्नि स्थापन, आचार्योपवेशन, माणवक उपवेशन, उदकाञ्जलि ग्रहण, प्रेक्षमाणस्याचार्य जप, माणवकवाचन, नामधेय कथन, व कल्प, माणवक पाणिग्रहण, नाभिस्पर्श, हृदयस्पर्श, पुनराचार्य उपवेशन, गायत्री अध्यापन, दण्डदान, भिक्षाचर्या, भिक्षाप्रार्थना, सायंकाल समिदाधान, सावित्रचरुहोम, कर्मसमाप्तिः, मन्त्रविचार।

तृतीय प्रपाठक के विषय-

प्रथमकण्डिका

गोदानकाल, चूडावदितिकर्व्यता, विशेष, तत्रोपनयन, अहतवाससो निषेध, अलङ्कार निषेध, ऐन्द्रस्थालीपाक कर्त्तव्य, अनुप्रवचनीयव्रतसाधारण, संवत्सरग्रतानाचारिणोपनयन, ब्रह्मचारिणीदण्डदान, आदेश, ब्रह्मचारी नित्य कर्म, गोदानिक-ग्रामिक-आदित्यव्रत-औपनिषद व्रत ज्येष्ठसामव्रतकाल, आदित्यव्रत नियमविशेष।

द्वितीयकण्डिका

व्रतदक्षिणा, तत्र विकल्प, महानाम्निकव्रतकाल, संवत्सरपक्ष विशेष, ब्रह्मचारी कर्त्तव्य, उपनयनव्रतान्त में तस्याभाव, पर्वश्रवणदक्षिणा, सपरिषत्कस्याचार्य भोजन, सब्रह्मचारिणश्च, ज्येष्ठसाम्नोऽप्यनुगापन ,ज्येष्ठसामव्रत नित्यव्रत।

तृतीय कण्डिका

उपाकर्मकाल, उपाकर्मणि उपनयनवत् सावित्र्यनुवचन, सामसावित्र्यनुवचन, सोम राजानमित्यस्यानुवचन,

आदितश्छन्दसामध्ययन, छन्द आदि हेतु होम, धानाभक्षण, दधिभक्षण, आचमनानन्तर विशेष, अत्रोपाकर्मणि कर्मक्रम, उपाकर्मानन्तरमध्ययनारम्भ विशेष, उत्तरायणे पक्षिण्यनन्तरमध्ययनारम्भ, दक्षिणोत्तरायनयोस्त्रिरात्रमनध्याय, उभयत्राचार्यतर्पण, श्रवणायामुपाकरण, उत्सर्गकाल, उत्सर्ग तर्पण, प्रत्युपाकरण में अनध्यायप्रकरण, अद्भुतप्रायश्चित्त, स्वल्पदोषप्रायश्चित्त।

चतुर्थ कण्डिका

ब्रह्मचारिण वेदपाठ, गुरुदक्षिणादान, विवाह, कन्या असगोत्रनियम, मातुरसपिण्डत्वनियम, श्रेष्ठत्व स्नातक वैविध्य, श्रेष्ठत्वनिर्धारण, समावर्तन, मण्डप रचना, आचार्य उपवेशन, ब्रह्मचारी उपवेशन, आचार्यों का अभिषेक, अभिषेकमन्त्र, आदित्योपस्थापन, मेखलात्याग, ब्राह्मण भोजन, केशादिवपन, परिधान, उपानहोर्धारण, आचार्यपरिपरीक्षा, रथारोहण, कौहलीयमत से अर्घ्यदान।

पञ्चम कण्डिका

स्नातकव्रतोपदेश, स्नातक, त्रैविध्य, आर्द्रवास परिधान निषेध, समावृतव्रतकथनोपसंहार।

षष्ट कण्डिका

गो पुष्टिकथन, प्रस्थानकाल मन्त्र, विलयन होम, व्रणलेपन, देवताविशेष पूजा, वृषभपूजा, अश्वयज्ञ, गवाश्वयज्ञकालनिर्णय।

सप्तम कण्डिका

श्रवणाकर्म व काल, अग्निप्रणयन, उपलेपनाद्यावृत, भूमौ पाणिस्थापन, प्रदोषकृत्य।

अष्टम कण्डिका

आश्वयुजीकर्मकथन, रौद्रचरुकरण, पायसेन होम, ब्राह्मणभोजनानन्तर मणिबन्धन, गायनृपातकप्राशनादि, नवयज्ञ।

नवम कण्डिका

आग्रहायणीकर्मकथन, बलिहरण, गृहपति उपवेशन, धूमशातन कनिष्ठानामुपवेशन,पत्नीपुत्राणाज्ञोपवेशन, दक्षिणशयन, त्रिरावर्तन, अरिष्टवर्गपाठ, गृहपति शयन विशेष, स्वस्त्ययनोचारणं वामदेव्यगान, प्रदोषे चरुहोम।

दशम कण्डिका

अष्टकानिरूपण, अष्टकाया देवतानिर्देश, अष्टकाया देवताविचार, अपूपप्रमाण, मांसाष्टका प्रकरण, अपूपप्रमाण, अष्टका होम।

चतुर्थ प्रपाठक के विषय-

प्रथम कण्डिका

वपाश्रपणी होम, अवदानग्रहण, स्थालीपाक, वन में कक्षोपधान।

द्वितीय कण्डिका

अन्वष्टक्यनिरूपण एवं काल, कार्य में दिक् निर्णय, अग्निप्रणयन, कर्षूखनन एवं काल, कुशास्तरण, वृषीस्थापन, तैलोपकल्पन, क्षौमदशोकल्पना,, ब्राह्मण उपवेशन, दैव ब्राह्मणोपवेशन, तिलोकदान, ब्राह्मण हस्त में गन्धदान।

तृतीय कण्डिका

रेखाकरण, पितृ आवाहन, अञ्जनदान, तैलदान, नमस्कार, गृहावेक्षण, पिण्डों पर सूत्र दान, पुत्रकामना पिण्डप्राशन, श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन।

चतुर्थ कण्डिका

पिण्डपितृयज्ञ निरूपण एवं काल, दो श्राद्धों में प्रतिमास के कर्तव्य, हविः संस्करण, वासोदान, श्रौत पिण्डपितृयज्ञनिवृत्ति विचार, अष्टप्रकरण, शाकाष्टकाकाल, स्थालीपाक होम, ऋणहोम, होमादि देवता, सीतायज्ञ, हल प्रयोग प्रकरण, इन्द्राग्निस्थालीपाक होम एवं काल विचार।

पञ्चम कण्डिका

काम्य कर्म विधि, नैमित्तिकसकर्म विधि, दिनरात्रि मन्त्र भेद, वैरुपाक्ष जप, काम्य प्रपद पाठ और प्रयोग, पुत्र पशु कामना, अभय कामना, अर्धमासव्रत नियम, अन्यत्रार्थमासव्रत नियमातिदेश, पार्थिवकर्मणि विशेष आवृत, अक्षततण्डुलविचार, वृहत्पत्रस्वस्त्ययनकाम होम, बलिदेवताकथन, क्षुद्रपशुस्वस्त्ययन काम, स्वस्त्यर्थवतो गृहागमनकाम।

षष्ट कण्डिका

अनकाममारमन्त्रप्रयोग, पापरोगविचार, अलक्ष्मी निर्णोद, भयाभाव तस्य काल, प्रसादकरकर्म, प्रसादप्राप्ति पर्यन्त नित्य कर्तव्य, प्रयोगेषु विशेष, स्वस्त्ययनार्थमादित्योपान्थान।

सप्तम कण्डिका

वास्तुकर्मणि भूमिनिरूपण, वर्णानुसार भूमि विचार, ब्रह्मवर्चकामविशेष, बह्मबल मन्त्रविचार, पशुकाम का पशुप्रदप्रयोग,गृहाभ्यन्तरस्यादृश्यताकरण, पूर्वादिवर्जनीयवृक्षादि, होमानन्तर बलिहरण वृक्ष देवतानिर्देश, उद्धरणपक्ष में देवता पूजन, गृह के मध्य में याग, मिश्र होम, बलिदेवता कथन।

अष्टम कण्डिका

स्वस्त्यनकर्म, विशेष होमादि विचार,प्रसादकरकर्म, ग्रामकामस्यामोघनामक कर्म, वृत्त्यविच्छित्तिकामवृत्तिप्रदकर्म, वृत्तिविचार, पण्यहोम, पण्यवस्तुप्राप्त्यर्थ तन्तुहोमादि, यशस्काम हेतु पूर्णहोम, सहायकाम हेतु पूर्णहोम।

नवम कण्डिका

चतुष्पथ अग्नि स्थापन, गोषु तप्यमानासु तत्तापशान्त होम , ग्रन्थिबन्धन, सहायानेनञ्चानस्वस्त्ययन, आचितसहस्रकामस्याक्षतसत्तवाहुति, क्षुद्रपशुकामस्याविपुरीषहोम, वृत्तयविच्छित्तिकामस्य कम्बूकहोम, विषनिवृत्तिजपप्रयोग, स्नातकस्य स्वस्त्ययनप्रयोग, क्रिमिचिकित्साजप, पशु हेतु क्रिमिनिवर्तनजप।

दशम कण्डिका

अर्हणप्रयोग, जपस्थाननिर्देश, जपकालनिर्देश , उभयपादप्रक्षालनम् ,अर्घ्यप्रतिग्रहण ,आचमनीयाचमन ,मधुपर्कप्रतिग्रहण, मधुपर्कप्राशन , मधुपर्कस्य भक्षणपानयोर्विचार, मधुपर्क शेषप्रतिपत्ति, मधुपर्कभक्षण

में आचमनविचार, अर्हणीय का नापित प्रति श्रावण, सम्पूर्णमन्त्रपाठविचार, अर्हणीयस्य गवानुमन्त्रण, यज्ञादावालम्भानुमति, अपादर्शन, आचार्यादि लक्षण ,संवत्सरान्त अर्हण ,यज्ञविवाहसंवत्सरादि, भाष्यकृत परिचयादि

इकाई 6. अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र परिचय

अथर्ववेद- ऋगादि अन्य वेद केवल आमुष्मिक फल देने वाले हैं, लेकिन अथर्ववेद ऐहिक और आमुष्मिक दोनों ही दृष्टियों से उपयोगी है जैसा कि सायणाचार्य का कथन है **व्याख्याय वेदत्रित - यमामुष्मिकफलप्रदम्। ऐहिकामुष्मिक फलं चतुर्थ व्याचिकीर्षति**। (अथर्ववेद भाष्य भूमिका)

ब्रह्म यज्ञ का सर्वप्रमुख ऋत्विक् है। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार तीनों वेदों के द्वारा यज्ञ के मात्र एक पक्ष की ही पूर्ति होती है, ब्रह्म मन के द्वारा उसे पूर्णता प्रदान करता है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

यजुर्वेद का सामान्य परिचय

वेद	उपलब्ध शाखा	ब्राह्मण	उपनिषद्	शिक्षा-प्रातिशाख्य	विशिष्ट विवरण
अथर्ववेद	पैप्पलाद शौनक	गोपथ ब्राह्मण	प्रश्नोपनिषद् मुण्डकोपनिषद् माण्डूक्योपनिषद्	माण्डूकी शिक्षा अथर्वप्रातिशाख्य चतुराध्यायी	विषय- प्रायश्चित्त विधान ऋत्विक- ब्रह्मा काण्ड – २० मन्त्र- 5977 आचार्य- सुमन्तु देवता- सोम

अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र- अथर्ववेदीय कौशिक गृह्यसूत्र है।

उपलब्ध गृह्यसूत्र-

वेद	गृह्यसूत्र
अथर्ववेद	कौशिक

यह शौनक शाखा से सम्बद्ध है। इसमें 14 अध्याय है, इसमें भारतीय यातुविद्या से सम्बन्धित अनेक मन्त्र-तन्त्रों का भी विवेचन है। इसके प्रथम अध्याय में ही पाक यज्ञों के 4 भेद कहे है- **चत्वारः पाकयज्ञाः। हुतोऽहुतः प्रहुतः प्राशित सिद्धत्वात् ।** अर्थात् पाक यज्ञ 1. हुत. 2. अहुत, 3. प्रहुत और 3. प्राशित ये 4 प्रकार के होते हैं।

अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र परिचय -

प्रथम अध्याय के विषयों का परिचय- वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों से संस्कार, पाकयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञादि की उत्पत्ति, पाकयज्ञ की परिभाषा, उपकरणों को वेदी के पास रखने का नियम, प्रोक्षण करने की रीति, हवन की विधि, इध्मों का आधान, अभिमन्त्रण, अभिषेचनादि, ब्रह्मा के कर्त्तव्य राजकर्म, अभिचारिक कर्मों में विशेषता, वेदी के किस भाग में कौन- कौन सी आहुतियाँ देनी है, अवदान की प्रक्रिया, आहुतियों

के देवता, उनके नाम, विभिन्न आपत्तियों के फल, अमावास्या, पौर्णमासी को होम करने की रीति, संस्थित होमादि, दर्श एवं पौर्णमास का व्याख्यान, स्थालीपाक की विधि में स्थालीपाक की विधि समझना, जुहोति से घृत जानना,यह आहुति पदार्थ का विशेष नियम है, उदक से जलपात्र, अनुपदिष्ट की जगह आज्य काष्ठ अनुपदिष्ट होने से भक्षयति से पुरोडाश, प्रयच्छति से मन्थ एवं ओदन और उदक संस्कार कथन से जलपात्र समझना, पुरस्तात् होम के निशा कर्मों के नियम, विधि कर्मों में जलक्रिया तीन करना, विभिन्न सूत्रों के विनियोग दशा में नियम, कर्म, अभिचारकर्म इनकी सामग्रियों, वास्तोष्पतीय, मातृ- नामादि की परिभाषा, अम्बयो यन्ति" आदि सूक्तों का स्पष्टीकरण और शान्त्युदक,

द्वितीय अध्याय के विषयों का परिचय- मेधाजनन, ब्रह्मचारी के ब्रह्मचर्य की सफलता, हवि करने के नियम, बच्चे को शंखपुष्पी आदि का चटाना, जातकर्म के महोपकारी नियम, रस कर्म, समुद्रक, पौर्णमासी को निर्ऋतिकर्म, ब्रह्मचारी साम्पदकर्म करे, सम्पत्ति कामना, सांमनस्य के लिये काम्यकर्म ग्रामप्राप्ति एवं सर्वकामना की सिद्धि, रोगों, हस्तिवर्चस आदि को विधिपूर्वक यन्त्र बांधने से फल, यक्ष्मा की दवा मेघजल का नियम, युद्ध का वर्णन, विजय कर्म, इषुनिवारण कर्म, शत्रुसेना की बुद्धिभ्रष्ट करना, उद्वेगकर कर्म, जयकर्म, जयपराजय ज्ञान, रोगी जीवेगा? जानने का यंत्र। सांग्रामिक विधान, परसेना में किन महारथियों का मरण,सोमलता को योद्धाओं के हाथ में बांधना, अभयकर्म, सेना, माण्डलिक राजाओं का अभिषेक एवं क्षत्रिय को सावित्री पाठ।

तृतीय अध्याय के विषयों का परिचय- दरिद्रता दूर करने के लिए, मन चाहा धन माँगने वाला निर्ऋति कर्म, गोपालनविधि, पुष्टिकर्म, पीयूष की संज्ञा, सर्वकाममणि, शान्ति, हल जोतने आदि, खेती सम्बन्धित कर्म, बहुत बैल, गाय, ऐसी इच्छा वाला मनुष्य यह कर्म, पदार्थवृद्धि कर्म, गोशान्ति कर्म, शान्त वृक्ष की शाखा को घर में लाकर अमावास्या और पूर्णमासी को रसकर्म, रस कर्म कुल, कुल की पुष्टि कर्म, हेतु कर्म, समृद्धिकर्म, समुद्रकर्म, नये मकान, (पत्थर, ईंट, मट्टी, खर, काठ आदिका क्यों न हो) में गृहप्रवेश कर्म गोवत्स कर्णभेद नियम, खेत बोने का कर्म और गोशाला कर्म, गृह सम्बन्धित विषय, कृषि कर्म, पुष्टि कर्म, सलिलगण के मन्त्र,

चतुर्थ अध्याय के विषयों का परिचय-

रोगों की दवा आदि का वर्णन, ज्वर का रोग यंत्र विधि, अत्तीसार, बहुमूत्र, हरें एवं कपूर के यंत्र बान्धने से पिशाच भगाने का उपाय,जलोदरादि रोगों का यंत्र, वात, पित्त, कफ, अतिकास, शिर पीड़ा, वातज्वर, कीटि, बन्ध, शिरो रोग, वातगुल्म, शरीर के किसी अङ्ग से या शरीर के बाहर रुधिर बहे इसका यंत्र,

हृद्रोग, सफेद कुष्ट, यक्ष, अप्सरा, भूत, प्रेत, और ग्रहादिका, राजयक्ष्मा आदि, रोग, जलोदर, कुल परम्परा से होने वाले रोगों का यंत्र, पिशाचगृहीत, क्षेत्रीय रोगों का यंत्र, अरुपी, उदर, गण्डु,लकवा, यक्ष्मा, सर्व रोग भैषज्य, हथियार से कटे रुधिर का, विपका, बुद्धिभ्रष्ट का, सूतिका, रोग को छुड़ाने का उपाय, सर्प काटे का, ज्वर, कृमिरोग, राक्षसगृहीत का उपाय, पित्तज्वर, केशगिरते हुये और केश बढ़ाना, कलेजा का जलन, जलोदर, कामला ,गण्डमाला, रक्षोग्रह, किसी अङ्ग का या सब अङ्गों में शूल होने की दवा, अक्षत व्रण, पक्षी के काटने कास एवं कफ गिरने की दवा, गण्डमाला, राजयक्ष्मा, सांप काटना की, सर्वरोगों की दवा, मृतावत्सा की दवा, सुख से बच्चा पैदा होने का यंत्र, वन्ध्या को सन्तान होने का, मृत वत्सा, बच्चा होकर मरजावे बच्चे को बचाने के उपाय, कुमारी को पति मिले, रस कर्म कुल, कुल की पुष्टि कर्म, हेतु कर्म, समृद्धिकर्म, समुद्रकर्म, नये मकान (पत्थर, ईंट, मट्टी, खर, काठ आदि , गृहप्रवेश कर्म बछड़े के कान को छेदने के नियम, खेत बोने का कर्म और गोशाला कर्म, गृह सम्बन्धी विषय, कृषि कर्म, पुष्टि कर्म, सलिलगण के मन्त्र,

पञ्चम अध्याय के विषयों का परिचय-

लाभ, हानि, जीत, हार, सुख, दुःख, उत्कर्ष, अपकर्ष, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, भय, अभय, रोग, अरोग, धनी- निर्धन, चर्म, अधर्म, मरण अमरण, धान्य होगा? खेत उपजेगा? घर में वास होगा? इत्यादि संसारी प्रश्नों का उत्तर मिलेगा, नैमित्तिक कर्म, मेघ को रोकना, खेत में बिजली पत्थरादि न गिरने से रोकने के उपाय, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, फसल में कीड़े हो जाना, चूहा, टिड्डी, शुक, स्वचक्र, परचक्र, वृष्टि निवारण, अपनी रक्षा के लिए यंत्र बांधना। कृत्या (जादू) का वापस, करना या कृत्या को मुर्दा करदेना और नदी के प्रवाह को जिस ओर चाहे घुमा देवे, वृष्टिकर्म विधि, धन के उपार्जन की सफलता, द्यूत में जीतना, विघ्नशान्ति कर्म, घोड़े को शान्ति, प्रवास मार्ग में भयादि विघ्न की शान्ति, व्यापार की चीजों को ले जाने के पूर्व लाभार्थ कर्म करना, घर के विरोध में सांमनस्य कर्म, पापलक्षण वाली स्त्री को देखने पर शान्ति कर्म, पुनर्विघ्नशमन, सर्प, श्रृङ्गी, दण्डादि का विघ्न नहीं होता, अवसान, शाला कर्म, बशा (बिनब्याई हुई गौ जो-कभी ब्याती नहीं) का प्रयोग, स्वप्न देखने पर शान्ति, किसी का सन्देश ले आकर कहने पर प्रायश्चित, बड़े भाई के रहते छोटे भाई का ब्याह न करना, बच्चे के ऊपर के दो बड़े दाँत निकलने पर शान्ति, सब प्रकार की शान्तियों का वर्णन,

षष्ठ अध्याय के विषयों का परिचय-

अभिचार पद्धति, स्वस्त्ययन कर्म, जङ्गल में जाते समय मार्ग में समस्या,चोर, हुदाल, चरक, सिंह, बनैले हिंसक जानवरों से भय का निवारण।

सप्तम अध्याय के विषयों का परिचय-

गोशाला के कल्याणार्थ गोष्ठकर्म, खेत के नाश करनेवाले, मूसा, पतङ्ग, टिड्डी, हरिण, रुरु आदि, कारागार से बन्धुओं को छुडाना,जले अङ्गवाले, अग्नि के उत्पात में शेवाल से घेरा कर, नाव पर नौ मणि बान्धकर चढे। नष्ट द्रव्य को पाने का उपाय, गोदान कर्म (शिर के सब केशों को कटवाने का संस्कार) अञ्जन मणि को बान्धना, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण, काम्य कर्मों का वर्णन, ब्रह्मौदन अग्नि, सेनाग्नि, ऋत्विकस्य, गौ के विषय में वर्णन।

अष्टम अध्याय के विषयों का परिचय-

पञ्चौदन शतौदनादि, सब यज्ञ २२ प्रकार के हैं, ब्रह्मौदन।

नवम अध्याय के विषयों का परिचय-

अग्न्याधानादि, अरणिद्वारा अग्नि को मथ कर उत्पन्न करना, नाव में बैठ कर नदी आदि पार करना, गृहप्रवेश, शान्त्युदक, आहुतियों का सायंप्रात अग्निहोत्र करना, याज्ञिक व्रत, श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ देना, बलिहरण, ब्राह्मणभोजन के पश्चात् भोजन।

दशम अध्याय के विषयों का परिचय-

विवाह संस्कार

एकादश अध्याय के विषयों का परिचय-

अन्त्येष्टि कर्म ।

द्वादश अध्याय के विषयों का परिचय-

पिण्ड पितृ यज्ञ का वर्णन

मधुपर्कविधि

त्रयोदश अध्याय के विषयों का परिचय-

अद्भुत कर्मों का वर्णन अद्भुतकर्म की परिभाषा, फल, कहाँ- कहाँ इस कर्म होने की सूचना देवताओं की ओर से होती है, मेघ, यक्ष के उपद्रव, गीदड़ के बोल, ग्रहणों, उषा, दुर्भिक्ष, हैजा, प्लेगादिसारकनाशन की विधि, आकाश में देव मूर्त्तियां इत्यादि देश, नगर ग्राम आदि कों देवी उपद्रव, अद्भुत कर्म, शान्ति कर्म।

चतुर्दश अध्याय के विषयों का परिचय-

यज्ञ गृहरचना आदि। समस्त पाक यज्ञिय कर्म, अष्टका कर्म का वर्णन, अभिजित नक्षत्र में जब चन्द्र का, सम्बन्ध हो, अध्यापक शिष्यों का उत्सव, महाराजाओं, राजाओं को करने योग्य इन्द्रमहोत्सव, वेदों के पढ़ने पढ़ाने तथा जिस समय पढ़ना, पढ़ाना बन्द होगा इसका विचार, शुद्धिपत्र विचारादि।

इकाई 7. यज्ञ सामग्री परिचय सङ्कलन

पारस्करगृह्यसूत्र के कुछ पारिभाषिक शब्द एवं उनकी व्याख्या- आवसथ्याधानम् - आवसथ + ष्य आवसथ्य- घर में विद्यमान अग्निहोत्र की पवित्र अग्नि, यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाली पञ्चाग्नियों में से एक। उस अग्नि का आधान। अर्थात् इस शब्द का तात्पर्य घर की उस औपासनाग्नि से है जिसे श्रोत्रिय ब्राह्मण अपने होमकुण्ड में सतत प्रज्वलित रखते हैं।

7.1. यज्ञ में प्रयुक्त विषयवस्तु

हवि- हवि को यज्ञ का प्राण कहा जाता है। अग्नि में पकाई गई इस हवि को अमृत कहा गया है। हवि के लिए यज्ञों में घृत का भी प्रयोग करते हैं।

समिधा - यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाली आम्रादि लकड़ियों को ही समिधा कहते हैं।

यज्ञ भूमि- जहाँ यज्ञ वेदी और यज्ञ मण्डप का निर्माण करते उसे यज्ञ भूमि कहते हैं।

उपयमकुश – उपयमनकुश का तात्पर्य उस कुश से है जो वैवाहिक यज्ञाग्नि में प्रयोग में लाये जाते हैं। कुशों को एक साथ मिलाकर इसका प्रयोग किया जाता है।

प्रणीतापात्र - प्रणीता यह याज्ञिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होनेवाले पवित्र जल रखने के पात्र को कहा जाता है।

प्रोक्षणी - यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पुण्य जल छिड़कने या अभिमंत्रण के लिए प्रयुक्त पात्र विशेष का नाम। कभी-कभी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है। इसे प्रोक्षणी पात्र भी कहा जाता है।

स्रुवा- यज्ञ में आहुति देने के लिए काष्ठ निर्मित हस्ताकार चम्मच। किसी भी याज्ञिक अनुष्ठान में होम कर्म में इसकी नितान्त आवश्यकता होती है।

स्थालीपाक- स्थाली शब्द का अर्थ है पकाने का बर्तन या मिट्टी की हाँडी और सामाजिक स्थालीपाक शब्द का अर्थ है- एक धार्मिक कृत्य, इसका सन्दर्भगत अर्थ है- आज्याधिश्रयण, पुरोडाश निर्माण धाना।

नित्यहोम-सूर्योदय के पहले और सूर्यास्त के बाद प्रतिदिन घर में जो नैष्ठिक ब्राह्मण दही, अरवा चावल या अक्षत से होम करते हैं, वह नित्यहोम कहलाता है।

नैमित्तिक होम - किसी कार्य विशेष से सेनाग्नि या आवसथ्याग्नि में जो होम किया जाता है, उसे ही नैमित्तिक होम कहते हैं।

कुशकण्डिका - 25 अंगुलि का मण्डल बनाकर वहाँ की धूलि झाड़कर, गोबर और पानी से उस स्थान को लीपकर, स्रुवमूल से या किसी काठ के टुकड़े से तीन रेखाएँ खींचकर, उन रेखाओं से उठी धूल को उठा ले। फिर उस स्थान पर पानी छिट कर, कांसे या ताम्बे के बरतन में आग लेकर वेदी के बीच में

अग्निस्थापना करें। वेदी से दाहिने ब्रह्मा के लिए कुशासन बिछा दें। फिर प्रणीता पात्र में पवित्र जल भर दें। उसे स्थापित कर पवित्र अग्नि के चारों ओर कुश फैलाकर पवित्र नामक कुशों को दो खण्डों में विभक्त कर अर्थात् तीन पवित्र कुशों से दो तरुण कुशों पर आगे से एक बित्ता छोड़कर उसके टुकड़ों को प्रोक्षणी पात्र के जल से सींचकर प्रोक्षणी पात्र का संस्कार कर, अनुष्ठानोपयोगी वस्तुओं को जल से सींचकर, आज्यस्थाली में घी डालकर उसे प्रज्वलित आग पर रखकर, उसके चारों ओर जलती हुई लकड़ी को घुमाकर, घी पिघलाने के बाद कुशों को फैला दें। यही याज्ञिक विधि कुशकण्डिका है।

7.2 **प्रायश्चित्तार्थ द्रव्य -(पञ्चगव्य)** गोमूत्र), गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत(, पूजन सामग्री व्यवस्था-

पंचामृत घी -, दूध, दही शहद, शक्कर।

पंचगव्य गोबर – देशी गाय का गौमूत्र, गौदुग्ध, घी, दही।

पंचपल्लव पीपल -, आम, गूलर, बड़, अशोक।

पंचरत्न - माणिक्य, पन्ना, पुखराज, प्रवाल (मूँगा), मोती।

सप्तमृत्तिका हाथी का स्थान -, घोड़ा, वल्मीक, दीमक, नदी का संगम, तालाब, गौशालाराजद्वार ।

सप्तधान्य - उड़द, मूंग, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी।

सप्तधातु - सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा, राँगा, सीसा, आरकुट।

अष्टमहादान - कपास, नमक, घी, सप्तधान्य, स्वर्ण, लोहा, भूमि, गौदान।

अष्टांगअर्घ्य - जल, पुष्प, कुशा का अग्रभाग, दही, चांवल, केसर (कुमकुम रोली), दूर्वा, सुपारी, दक्षिणा।

दशमहादान - गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण ,देशी गाय का घी, वस्त्र, धान्य, गुड, चाँदी, नमक ।

पंचोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि।

ध्यान देने योग्य बातें- समस्त यज्ञ सामग्रियाँ शुद्ध एवं उत्तम गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए तथा दान देने योग्य वस्तुएँ जैसे- चन्दन, पंच वस्त्र, पंच पात्र, व्यास पीठ, आसन एवं जप माला आदि शुद्ध एवं उत्तम मानकों से युक्त होनी चाहिए।

हे ऋतुजों! आप अच्छी प्रकार से प्रदीप्त प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान अग्नि के निमित्त समस्त दोषों के निवारण करने में तीव्र स्वभाव वाले शुद्ध घृत आदि से होम में आहुति प्रदान करें। जैसा कि वेदवचन है-

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतन्तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे ॥ (शु.य.3.2)

7.3. यज्ञ सामग्री

कुमकुम

मोली

ग्राम सुपारी

जनेऊ

ईलायची

लौग

सिन्दूर

अबीर

केसर

गाय का शुद्ध घी

शुद्ध तिल

जौ

चावल

चीनी देशी

हवनपुडा

नवग्रहसमिधा

शुद्ध गुगल

शुद्ध गुलाल

शुद्ध इत्र

नागरमोथा

धूपबत्ती

रूई

कपूरकाचरी

इन्द्रजौ

माचिस

चिरौंजी

पीलीसरसों

बीलगिरि

सर्वौषधी

सतावरी

पंचरत्न

जटामांसी

शुद्ध शहद

भोजपत्र

बादाम

अगरतगर

काजु

किसमिस

चन्दनचूरा

सूखा गोला

गोला का चूरा

अंजीर

छुहारा

शुद्ध गुड

दोना

नारियल गट्टा

उडद

पापड

कर्पूर	शंख
केसरचन्दन	घंटी
गुलाल पंचरंगी	कलश
टोपिया पीतल का	पुष्पमाला
सफेदवस्त्र	ढक्कन
पीलावस्त्र	पुष्प
ब्राह्मण वरण वस्त्र	बड़े दीपक
तौलिया	नागरपान
माताजी का वस्त्र	दीपक
सुहाग पिटारी	ऋतुफल
भगवान के पाँचो वस्त्र	चाकू
आसन	लड्डू
ताम्बे के कलश	घर का सामान
पाँच बर्तन	पेडा
अशोक के पत्ते	चौकी
आम के पत्ते	पटा
तुलसीपत्र	दूर्वा
गेहूँ	थाली
गेंहू का आटा	केले के खम्भे
हल्दी पिसा	परात
हवन काष्ठ	दही
ध्वजा	कांसे का कटोरा
ध्वजा के लिए डण्डा-	गोबर गाय का गोबर
ईटें	कटोरी
मिट्टी के बर्तन	गोमूत्र

चम्मच

शुद्ध अबीर

गंगाजल

शुद्ध गुलाल

दरी

शुद्ध इत्र

बरगद के पत्ते

घडा

बाल्टी

शुद्ध धूपबत्ती

कपड़े

हवन की सामग्री

पीपल के पत्ते

लोटा

नारियल सूखा

7.4 मातृपूजन सामग्री–

नारियल

शुद्ध रूई

शुद्ध रोली

शुद्ध गाय का घी

यज्ञोपवीत

शुद्ध तिल

सुपारी

शुद्ध पीली सरसों

लौंग

सर्वौषधी

ईलायची

पंचरत्न

पिपल का पत्ते

जौ

आम का पत्ते

शुद्ध खांड़

शमीपत्र

शुद्ध शहद

मिट्टी के बर्तन

शुद्ध चावल

कलश

नवग्रह समिधा

ढोबला

गेहूँ

सराई

कलावा

शुद्ध सिन्दूर

पंचमेवा

गुगल

शुद्ध गुड	केसरचन्दन
नागरमोथा	इन्द्रजौ
दोना	केसर
कपूरकाचरी	
चिरोंजी	
कर्पूर	गोमूत्र
बीलगिरि	गंगाजल
मूंग	अशोक का पत्ते
गाय का गोबर	पलास का पत्तल
सतावर	भोजपत्र
जटामांसी	अगर तगर

स्थाली, धूप, दीप, समिध, नैवेद्य

7.7 हविर्द्रव्य, आज्य-

होमद्रव्यमान-

द्रव्यमानं मदनरत्ने भविष्यत्पुराणे -

"पलद्वयं तु प्रसृतं द्विगुणं कुडवं मतम्।

चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः प्रस्थाश्चत्वार आढकः ।।

आढकैस्तैश्चतुर्भिस्तु द्रोणस्तु कथितो बुधैः।

कुम्भो द्रोणद्वयं शूर्पः खारी द्रोणास्तु षोडश ।।

द्रोणद्वयस्यैव संज्ञान्तरं शूर्प इति ।

वाराहपुराणे -

पलद्वयं तु प्रसृतं मुष्टिरेकपलं स्मृतम् ।

अष्टमुष्टि भवेत् किञ्चित् किञ्चिदष्टौ च पुष्कलम् ।।

पुष्कलानि च चत्वारि आढकः परिकीर्तितः।

चतुराढको भवेद्द्रोण इत्येतन्मानलक्षणम्।।

विष्णुधर्मोत्तरे -

पलं च कुडवः प्रस्थ आढको द्रोण एव च।

धान्यमानेषु बोद्धव्याः क्रमशोऽमी चतुर्गुणाः।।

द्रोणैः षोडशभिः खारी विंशत्या कुम्भ उच्यते।

कुम्भैस्तु दशभिर्वाहो धान्यसंख्या प्रकीर्तिता॥

यज्ञ के पूर्व प्रायश्चित कराना- अथ यागं चिकीर्षुः यागाधिकारसिद्ध्यर्थ द्वादशाब्दं 360 षडब्दं 180, 60 त्र्यब्दं 45 अब्दं वा गवां मूल्यं पुरतो निधाय प्रायश्चित्तं कुर्यात्।

ॐ तत्सदद्येत्यादि स्मृत्वा अमुकगोत्रः शर्माऽहं अमुकयागाधिकारार्थं मत्सकलपातकनिवृत्यर्थं च विष्णुपूजनपूर्वकं देहशुद्धयर्थं अमुकप्रायश्चितमहं करिष्ये। तत्रादौ षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा विष्णुं सम्पूज्य ततः क्लिन्नवासः धर्माधिकारिणः सभ्यान् प्रदक्षिणी- कृत्य साष्टाङ्गं प्रणमेत्। ततः सभ्याः पृच्छन्ति -

किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज ?।

तत्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः।।

अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं बलम्।

यदि त्वं रक्षसे नित्यंनियतं प्राप्स्यते भवान्।।

यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्धयसि कर्हिचित्।

ततोऽञ्जलि वध्वा ब्राह्मणान् प्रार्थयेत् -

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः।

समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः।।

अपारसंसारसमुद्रसेतवः।

पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।।

आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः।

समीहितार्थार्पणकामधेनवः॥

समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयः।

रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥

विप्रौघदर्शनात् क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः।

वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम् ।। य.दी. 1.3।।

आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्रनाशनम् ।

श्रीः पुष्टि कीर्तिदं वन्दे विप्राणां पादपङ्कजम् ॥ 4 ॥

ततो गोवृषनिष्क्रयद्रव्यसङ्कल्पः--

ॐ तत्सत् करिष्यमाणामुक्कप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रय द्रव्यं सभ्येभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये । तेन श्रीपापापहामहाविष्णुः प्रीयताम्। प्रार्थयेत्--

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । मामीयस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ।।

सङ्कल्पितं द्रव्यं सभ्याग्रे निधाय ततः प्रायश्चित्ति ब्रूयात्-- अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य यावत् ज्ञाताज्ञात कामाकाम सकृदसकृत्कृत- कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत- सकलपातकातिपातकोपपातक-गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्मपातकसङ्करीकरण-'मलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकर प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं मामनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः।

प्रार्थना--

सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला, द्विजाः।

मम देहस्य संशुद्धि कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ।।

मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् ।

प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ।।

पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः।

ततो मामनुगृह्णन्तु भवन्तः, इति पुनः प्रणमेत् । (यज्ञदीपिका)

ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निबन्धसभ्यानुवादकानां पूजनं कृत्वा- पूजाङ्गत्वेन किञ्चिद्रव्यञ्च निधाय ततोऽनुवादकं सम्पूज्य तस्मै पापानुसारेण दक्षिणां दद्यात्। ततः सभ्याः पुस्तकवाचनपूर्वकमनुवाद् कस्यायै कथयेयुः, अनुवादकश्च कर्तारं प्रति वदेत्। तथा--

सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकः-अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणस्तव जन्मप्रभृति अद्य - यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ता भुक्त-पीतापीत सकलपातकातिपात- कोपपातक-गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्मपातक-सङ्करी करण-मलिनीकरणापा-त्रीकरण-जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं अमुकप्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयद्रव्यदान- प्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितं त्वया आचरितव्यं तेन तत्र शुद्धिर्भविष्यति। अतस्त्वं सर्वेभ्यः पातकेभ्यः कृतार्थो भविष्यसि। इति त्रिरुपदिशेत्। कर्त्ता ॐ भवदनुग्रहः, इत्यङ्गीकृत्य प्रणम्य अनुवादकं विसृजेत्। तदनन्तरं तीर्थे गृहे वा कृताह्निको यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं मम जन्मप्रभृत्यादि। निरासार्थेत्यन्तं अमुकयागाधिकारार्थं सभ्योपदिष्टं अदः प्रायश्चित्तं प्राच्योदीच्याङ्ग सहितं अमुकप्रत्याम्नयेन सुवर्णरजतप्रत्याम्नायेन) अहमाचरिष्ये। तथा-वपनं, दन्तधावनं पञ्चगव्यादिदशविधस्नानानि च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य प्रार्थयेत्-

श्रृणु भो त्वमिदं विप्र ! तुल्यमादिश्यते व्रतम्। तत्तु यत्नेन कर्त्तव्यं अन्यथा तत्वृथा भवेत् ।।

ततः शिरसि हस्तं निधाय-

आत्मनः शुद्धिकामा वा पितृणां तृप्तिहेतवे ।

वपनं कारयिष्मामि तीरेऽहं तव जाह्नवि ! ।।

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।

केशांनाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम् ।।

महापापोपपापाभ्यां केशलोमनखा द्विजाः।

क्षुरादच्छिन्न सर्वाङ्गास्ते मे दोषाः पतन्त्यधः॥ (यज्ञदीपिका शा. प्र.)

इति श्लोकान् पठित्त्वा शिखाकक्षोपस्थ वर्ज्यं नखलोमकेशादीनां क्रमेणोदक्संस्थं वपनम्। अत्र वपनाङ्ग स्नानम्। क्षौरान्ते द्वादश गण्डूषान् कृत्वा दन्तधावनकाष्ठं गृहीत्वा अभिमन्त्रयेत् आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ! ।।

ततो दन्तान् धावयित्वा पठेत् -

ॐ अन्नाद्यायव्यूहध्व सोमो राजाय आगतम्।। स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च॥

मुखदौर्गन्ध्य नाशाय दन्तानां च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।

भस्मादि दस प्रकार के द्रव्यों से स्नान-

1. **भस्मस्नान-** ॐ प्रसद्य भस्मनायोनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सꣳसृज्य मातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥ (शु.यजुर्वेद 12.38)

2. **मधु मिश्रित स्थानीय खेत की मृदा से स्नान-**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्मसप्रथाः॥ शु.यजुर्वेद 36.13॥

3. **गोमयस्नान-**ॐ मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषुरीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥16.16॥

4. **पञ्चामृतस्नान –**

गो मूत्र से स्नान- भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥36.3॥

गोबर से स्नान- ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षं नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ तै.आ.10.1.10

पञ्चगव्य स्नान- पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥18.36॥

दुग्ध से स्नान- ॐआप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरꣳशुभिः। भवानः सप्रथस्तमः सखा व्वृधे॥य.वे.12.114॥

दधि से स्नान- ॐदधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्॥य.वे.23.32॥

घृत से स्नान-ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम॥ अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतवृषभ वक्षि हव्यम्।।17.88।।

तिल जल से स्नान-ॐ तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पाऽआयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्यामाददे॥ यजुर्वेद 23.1॥

जौ जल से स्नान-ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्य्यसीदमहꣳ रक्षसाङ्ग्रीवाऽअपिकृन्तामि। यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि॥ यजुर्वेद 5.26॥

कुश जल से स्नान- ॐदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टङ्गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टं गृह्णामि॥ य.वे.1.10॥

5. गोरजस्नानम्- ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरम्पुरः॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥1॥

6. धान्यमिश्रित जल से स्नान-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोऽसि॥ यजुर्वेद1.20॥

7. **फल मिश्रित जल से स्नान**- ॐयाः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥ यजुर्वेद 12.89॥

8. **सर्वौषधि से स्नान**- ॐया ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतन्धामानि सप्त च॥ यजुर्वेद 12.75॥

9. **स्वर्णजल से स्नान**-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्क कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ यजुर्वेद 13.4॥

10. गङ्गोदकस्नान- ॐ **आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्ज्जे दधातन॥ मुहे रणाय चक्षसे**॥11.50॥

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य अङ्गीकृतप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विष्णुपूजनपूर्वकं विष्णुश्राद्धं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। शालिग्रामशिलायां श्वेतचन्दनादिभिर्विष्णुं सम्पूज्य। देशादि स्मृत्वा विष्णु- प्रीत्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्ग विष्णुश्राद्धसम्पत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं चतुर्थ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा विभागं विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये। तेन पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्। ततः पूर्वोच्चारित.. पूर्वाङ्गगोदानमहं करिष्ये । गोनिष्क्रयद्रव्यमादाय। देशकालौ सङ्कीर्त्य... अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहंप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितं गोदानप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये। प्रार्थना-गावो ममाऽग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। ततो व्याहृति-भिराज्येनाऽष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वा होमं करिष्ये।

तत्र पञ्चभूसंस्कारपूर्वकबिटनामाग्नेः प्रतिष्ठापनं करिष्ये। तद्यथा। रत्निमात्रस्थण्डिले कुशैः परिसमूह्य। तान् कुशानैशान्यां परित्यजेत्। गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य। स्फ्यमूलेनोल्लिख्य । अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य। जलेनाभ्युक्ष्य। ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ

ऽआसादयादिह। इत्यग्निं स्थापयेत्। ब्रह्मवरणम्। अस्मिन्व्याहृत्यादिहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यै रमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततः कुश-कण्डिका। अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ततः परिस्तरणम्। आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। अग्नेरुत्तरतः पात्रासादनम् ।पवित्रच्छेदनार्थं कुश- त्रयम् पवित्रार्थं कुशपत्रद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्था। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्रुवः। आज्यम्। मन्त्रसाधितपश्चगव्यम्। ब्रह्मकूर्चम्। पूर्णपात्रम्। पवित्रकरणम्। तत्र क्रमः। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणी- कृत्य त्रिभिश्छिन्द्य द्वौ ग्राह्यौ त्रिस्त्याज्यः। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय। त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षितजलेनासादितवस्तुसेचनम्। अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीं निधाय। आज्यल्यास्थात्यामाज्यनिर्वापः। अधिश्रयणम्। ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। स्रुवप्रतपनम्। सन्मार्गकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतःस्रुवं संमार्ज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निदध्यात्। आज्यमुद्वास्याग्नेरुत्तरतः प्रणीतापश्चिमतो निधाय। आज्यो-त्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। आज्यमग्नेः पश्चिमतो निधाय उपयमनकुशान् वामहस्ते- कृत्वा घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः दक्षिणहस्तेनाद। योत्तिष्ठन् प्रजापति मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत्। ततः प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रकरेण ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये0 । इति हुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। एवं सर्वत्र। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय..। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये ...। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय..। अनन्वारब्धः - **इति प्रायश्चित्तम्**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- यज्ञ दीपिका
- श्रौतस्मार्तयज्ञविमर्शः
- स्मार्तोल्लासः
- नित्यकर्मपूजाप्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर
- आश्वलायनगृह्यसूत्रम्
- पारस्करगृह्यसूत्र, डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
- गोभिलगृह्यसूत्र, श्री चिन्तामणी भट्टाचार्य, मुनसीराम मनोहरलाल प. पीवीटी, टीटीडी. दिल्ली
- कौशिकगृह्यसूत्रम्
- कुण्डमण्डपसिद्धिः
- मुहूर्तचिन्तामणिः
- उपाकर्मप्रदीपः
- माध्यन्दिनसंहिता

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in